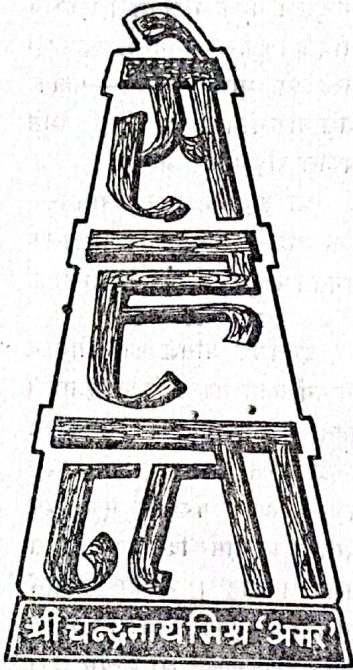




‘निकाम कर्मक उपदेश सिद्धान्तक बात भैंयो सकैत अछि, व्यावहारिक जीवनमे नहि—किछु तँ यशोलाभक कामना मनुखकेँ होयबे करतैक । ओतवा यदि नहि होइत छैक तँ ओ मनुख नहि थिक; अहाँक इच्छा थिक ओहन लोककेँ अहाँ देवता कहियौक अथवा आन किछु, मुदा मनुख कहबैक तँ हम से मानवाक लेल तैयार नहि छी । अहाँ एहि लेल लाठी उठाबी तँ से अहाँ सबकक बात थिक । फौदारिओ करव तँ से सहा करव ।’

ई हमर मास्टर साहेबक ‘फिला-



सेहन्ताक पूति

सफी थिकनि, फिलासफी दोबगर लगैछ, दर्शन नहि, दर्शन शब्द बड़ हलुक लगैत छैक । ओ हमरे मास्टर साहेब छथि से नहि, अहाँक मास्टरे साहेब थिकाह, किएक तँ ओ की कोनो स्कूलमे मास्टरी करैत छथि ? नहि । मास्टर साहेब शब्द सेहो बड़ रोबगर लगैत छनि तँ ओ अपन नामे मास्टर साहेब राखि लेने छथि । आव अहीं कहू जे अहाँ जँ हुनका सोर करबनि तँ की कहिकऽ ? कहऽ पड़त ने मास्टर साहेब ? आव कहू अहाँक मास्टर साहेब भेलाह की नहि ?

मनुखकेँ सेहन्ता सेहो होइत छैक । गदहा की सेहन्ता करत ? सेहन्ता नहि भेलैक तँ ओ मनुख गोबरक चोट थिक, अहाँक इच्छा थिक चिपड़ी पाथि लियऽ, अहाँक इच्छा थिक गोरहा बना लियऽ; नहि जँ ओकरा खेतमे फेकि दिएक तँ ओ प्रतिवाद किएक करत ? मुदा अहाँ ओहिसँ ऐंठो फेरि सकैत छी । कहवाक आशय ई जे जकरा मोनमे सेहन्ता नहि भेलैक ओहि मनुखकेँ अहाँ नाम चाहीं तँ नामे, चाकर चाही तँ चाकरे बना सकैत छी । मुदा हमरा-अहाँक मास्टर साहेब तेहन नहि छथि । हुनका मोनमे बहुत सेहन्तासभ होइत छनि, तकरा पूर करवाक हेतु दस-पाँच, पचीस-पचास, सय दू सय टाका धरि बेर-कुवेरपर ओ कुवेर जकाँ खर्च कऽ सकैत छथि । तखन अहीं कहू जे ओ अपन सेहन्ता किएक ने पूर कऽ सकैत छथि ? •

एक बेर सेहन्ता भेलनि जे कवि होइतहुँ । तखन ओ कवि भेलाह । सेहन्ता किएक भेलनि तकर कारण अहाँकेँ बुझवाक उत्कण्ठा मोनमे भेल होयत । यदि कारण नहियो बूझी तँ कोनो तेहन हानिक संभावना नहि, तखन व्यर्थ किएक कारणक झेलमे पड़ब ? ओहिना बूझि लियऽ जे हुनका कवि बनबाक सेहन्ता एक बेर भऽ गेलनि । तखन एक टा प्रश्न

अवश्य आवि सकैछ जे जँ सेहन्ते भेलनि तँ कवि बनबाक किएक ?

बात भेलैक जे एक बेर रविक दिन रहैक, कातिक मास, तँ उग्रनाथ महादेवक दर्शन करऽ पहुँचलाह भवानीपुर । संयोगसँ ओहि दिन ओहि ठामक लोक विद्यापति-स्मृति-दिवस मनबैत छल । सभा होइत छलैक, लाउड-स्पीकर बजैत छलैक, लोकसभ विद्यापतिपर भाषण कऽ रहल छल । ई सभ देखिकऽ मास्टर साहेबकेँ छगुनता भेलनि, मुदा सम्पूर्ण कार्यक्रम देखि-मुनि लेलापर एतवा बूझि गेलथिन जे विद्यापति कवि रहथि । ‘हुनकर गीत तँ बियाहमे मोगी सभ बहुत गौने रहय, अपनो कैक टा गीत हुनकर बनाओल अबैत अछि. . . . ई सभ बात सोचि गेलाह ।

कवि भेला सन्ताँ लोक एना गून गबैत छैक तँ हमरो मास्टर साहेब गीत बनौताह, कवि बनताह, लोक गून गीतनि, अपने मरियो जयताह तँयो लोक सुमिरैत रहतनि । ओ अवश्य गीत बनौताह, अवश्य कवि बनताह आ आइयेसँ कवि बनबाक अभ्यास करताह ।

माइकपर लोक सभ बजैत छल । लोक कनेके जोरसँ बाजल करय आ ओतेक लोककेँ सुनवा जोगर भऽ जाइक । भाषण, कविता, विद्यापतिक गीत जे किछु होइक, खतम भेलापर लोक बड़ी जोर-जोरसँ खुसीमे थपड़ी बजाबय । इह, हमरो मास्टर साहेब किछु कहितथिन तँ लोक थपड़ी बजितनि । अच्छा, एक टा गीते विद्यापतिक गौताह, कमसँ कम ओहि भोंपामे बजबाक सेहन्ता तँ पूर होयतनि, लोक से थपड़ी बजैतनि । वस, हमर मास्टर साहेब मँचपर पहुँचबाक हेतु आगामे बँसल लोक सबकेँ बिहियबैत आगाँ मुँह ससरलाह, जेना कुतियारकेँ बिहियबैत, लोक छरक्का ताड़वाक हेतु बिचला खेतमे लोक पहुँचैत अछि । जे व्यक्ति अपन

सेहन्ता एहन वस्तु थिक, जे सदच्छन मनुष्यक मोनके छूनहि रहैत छैक; भजै ओ पूर होउक वा नहि । संगहि ककरा, कलन, कोन बातक सेहन्ता भऽ जयतैक से बड़का-बड़का वैज्ञानिक आविष्कार कयनिहारक देयता सेहो नहि भविष्यवाणी कऽ सकैत छथि । मास्टर साहेबकेँ जँ कवि बनबाक आ सभापति-पदसँ भाषण करबाक सेहन्ता भऽ गेलनि तँ ताहि लेल योग्यताक कोन काज ? हुनका सेहन्ता भेलनि आ तकरा ओ पूर कयलनि । कोना पूर भेलनि से जनबाक हेतु तँ ई हास्य-व्यंग्य-कथा पढ़नहि ।—सं०

कविता सुना रहल छलथिन तनिकर कविता समाप्त होइत देरी मास्टर साहेब माइक लग ठाढ़ भऽ गेलाह । संयोजक महोदय कहलथिन जे सभापतिसँ अनुमति लऽ लियऽ तखन गीत कहबैक ।

मास्टर साहेब कनेक अप्रतिभ होइत बँसलाह आ सोचऽ लगलाह . . . ई सभापति के थिक, जकर डाक बरैत छैक, हुकुम चलैत छैक ? जिज्ञासा कयला उत्तर पता लगलनि, जिनका गरदनमे माला छनि से सभापति थिकाह । मास्टर साहेबकेँ सेहन्ता (शेष पृष्ठ १० पर)



लेखक

रत्न भण्डार

भागलपुरक घटना थिक । एक दिन सुप्रसिद्ध कथाकार श्री शरदचन्द्र चट्टोपाध्यायक भेंट अपन महत्लाक डाकियासँ भेल । ओकरा पुछलथिन— 'हौ देवकी, हमर कोनो चिट्ठी-पत्री अछि की ?'

डाकिया उत्तर देलकनि—“जी नहि । अपनेक तँ नहि अछि । एहि बीचमे मच्छर बाबू नामक क्यो नव व्यक्ति अयलाह अछि एहि महत्लामे ?’
‘एहि बंगालीटोलामे तँ क्यो मच्छर बाबू नहि छथि ।’ शरत बाबू उत्तर देलथिन ।

“परंच छथि तँ कोनो बंगालीये ।’
डाकिया कहलकनि ।

शरत बाबू मच्छर बाबूक पत्र डाकियाक हाथसँ लऽ देखैत कहलथिन—‘ई तँ हमरे थिक ।’

तँ की अहाँ मच्छर बाबू छी ?
डाकिया जिज्ञासा कयलक ।

शरत बाबू कहलथिन—‘ई समासक मामला थिकैक । तँ नहि बुझबहक ।’

ओ पत्र शरत बाबूक मामा विप्रदास चट्टोपाध्याय पटनासँ लिखने छलथिन । व्याकरणक विशेष प्रेमी रहलासँ ओ श्रीमत् ओ शरदचन्द्रकेँ मिलाकऽ श्रीमच्छरचन्द्र चट्टोपाध्याय लिखि देने छलथिन ।

X X X

सुप्रसिद्ध इतिहासकार कालिदास नाग एक बेर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ भेंट करबाक लेल गेलाह । जखन ओतऽसँ धूरऽ लगलाह तँ गुरुदेवसँ कहलथिन—‘हमरा यदि पत्र लिखबाक हो तँ मार्फत विजयकृष्ण बसु, चिड़ियाघर, कलकत्ताक पतासँ लिखब ।’

विनोदी गुरुदेव किछु दिनक पश्चात् डाक्टर नागकेँ एक पत्र लिखलथिन । पताक स्थानपर लिखलथिन—चिड़ियाघर; नरविभाग; कलकत्ता ।

X X X

स्वर्गीय भोपालक नवाबक दरबारमे संगीत-समारोहक अंतिम दिन छल । बीतल समारोहक दिनमे सभक आशाक विरुद्ध कोनो कलाकारकेँ पुरस्कारक रूपमे फुटलो कौड़ी नहि भेटल छलनि । सभ क्यो मुँह बिधुओने बैसल छलाह ।

नृत्यसम्राट् शंभु महाराज अपन नृत्य प्रारम्भ कयलनि । दर्शकसभ वाह वाह कऽ उठल । “वाह वाह” सुनैत देरी शंभु महाराज अपन तौनीक दूनू कोन दूनू हाथसँ पकड़ि डोलबऽ लगलाह । नवाब महाशय ई देखि पुछलथिन—“महाराज ई की ?”
शंभु महाराज उत्तर देलथिन—‘सरकार वाह-वाही समेटि रहलहुँ अछि ।’

नवाब साहेब तँ लाजे गड़ि गेलाह । तुरत कलाकारसभकेँ समुचित पुरस्कार देबाक व्यवस्था कऽ देलथिन ।

X X X

हास्य-व्यंग्यक अवतार स्टीन ली काक जाही क्षण अपन मित्र-मण्डलीमे जाइत छलाह, अपन हँसी-मजाकक फुचकारीसँ सभकेँ सराबोर कऽ दैत छलाह । हुनक चुटकुला ओ खिस्सा सुनि हँसैत-हँसैत सभक पेटमे बगहा लागि जाइत छलैक । ओ एक बेर एक छोट खिस्सा कहलथिन—एक समय भूखेँ अपस्याँत भेल एक मनुष्य एक व्यक्तिक घर पहुँचल । घरक मालिक ओकरा देखि पुछलथिन—‘कहू हम अपनेक की सेवा कऽ सकैत छी ?’

भुखारि कहलक—‘हम दू दिनक भूखल छी । केवल दू रोटी खयबाक लेल भेटय; ताही लेल अयलहुँ अछि ।’

घरबला गंभीरतापूर्वक पुछलथिन—‘यदि तोरा कालहुक बासि रोटी खयबाक लेल भेटौक तँ खयबे ?’
‘अवश्य महाराज ! हम तँ ओकरा प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण कऽ अपन भूखकेँ तृप्त करब ।’

‘बेस । तँ ठीक अछि । काल्हि एही समयमे हमरा ओतऽ चल आ । आजुक भोजनसँ हम अवश्य तोरा लेल किछु रोटी बचाकऽ राखि लेब ।’ ई गृहपतिक अंतिम उत्तर छल ।

X X X

जार्ज बर्नर्ड शाक नाटकक फिल्मीकरण करबाक लेल अनेक फिल्म-निर्माता चेष्टा कयलनि । परंच शा अपन पोथीसभक फिल्मीकरणक अधिकार बेचऽ नहि चाहैत छलाह । एही लेल ओ फिल्मनिर्मातासभसँ ततेक रुपयाक माड करैत छलाह जे ओ सभ नहि दऽ सकैत छल आ हिनक अपन इच्छा रहि जाइत छलनि ।

एक दिन एक फिल्मनिर्माता शासँ भेंट कऽकऽ कहलथिन जे अपनेक कृतिसभक जे उचित मूल्यांकन होयबाक चाही से नहि भऽ रहल अछि । तकर कारण ई जे अपनेक एकोटा कृतिक फिल्मीकरण नहि भेल अछि । फिल्मीकरण भऽ गेलासँ पाठकसभक मध्य अपनेक पोथीसभक यथार्थ ओ प्रशंसनीय मूल्यांकन होयत ओ एकरा संगहि संग अपनेक यशमे सेहो वृद्धि होयत । सिनेमा अपनेक कलाक विस्तारक उत्तम मार्ग अछि ।

शा गंभीरतापूर्वक मूड़ी डोलबैत उत्तर देलथिन—“यैह तँ हमरा अहाँमे भेद अछि । अहाँ केवल कलाक दृष्टिसँ सोचैत छी आ हम रुपयाक दृष्टिसँ ।”

X X X

बर्नर्ड शा बहुत पातर छलाह आ

चेस्टरटन बहुत मोटायल । एकठाम भोजमे दूनू गोटेय निमंत्रित छलाह । चेस्टरटन शासँ कहलनि—‘अहाँकेँ देखि लोक सोचैत होयत जे एहि देशमे अकाल पड़ि गेलैक अछि ।’

शा तड़ दऽ उत्तर देलथिन—“आ अहाँकेँ देखि लोक अकालक सभसँ पैघ कारणो बूझि गेल होयत ।”

X X X

इंगलैंडक प्रसिद्ध कवि वायरन स्वप्नसँ बहुत अकच्छ रहैत छलाह । बहुत भयानक-भयानक सपनासभ हुनका अबैत छलनि । अंतमे विवश भऽ ओ अपन गुरुआक एक दिस पिस्तौल आ दोसर दिस एक टा छूरा राखऽ लगलाह । भयंकर सपनासँ जखन-जखन हुनक निन्न टूटि जाइत छलनि तखन-तखन ओ शून्यमे छूरा देखा पिस्तौलसँ गोली छोड़ि फेर सूति रहैत छलाह ।

—श्री बाचाल बाँकीपुरी

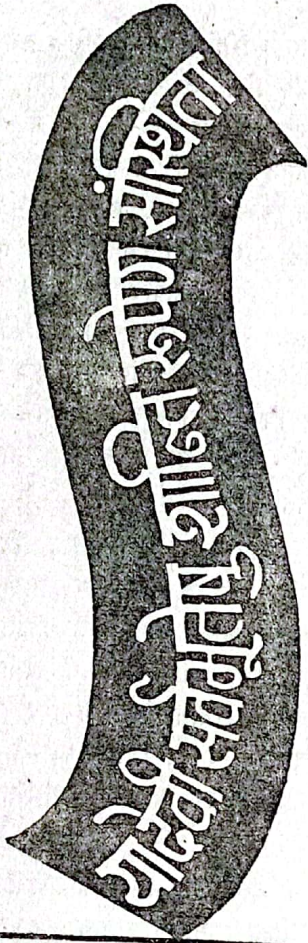
सेहन्ता

(पृष्ठ ६ क शेषांश)

होअऽ लगलनि जे हमहू सभापति होइतहुँ तँ हमरो गरदनिमे लोक माला पहिरबितय, सभामे हमरो डाक बरैत, हमरो जूति चलैत । बस, ओही ठाम निश्चय कयलनि जे आन क्यो जँ सभापति नहि बनाओत तँ अपने सभा करब, अपने सभापति बनब ।

अस्तु सभापतिक अनुमति पाबि ओ गीत गौलनि । आरंभ करबासँ पहिने कहलथिन-महाकवि विद्यापति ठाकुर महादेव बाबाक बड़ भक्त छलाह तँ नचारी-महेशवाणी बनबैत छलाह, एक टा नचारी सुना दैत छी । एक कोनमे किछु महादेवक भक्तलोकनि बैसल छलाह । नचारीक प्रस्तावसँ ओ लोकनि प्रसन्न भऽ थपड़ी बजौलथिन । बस की छल, सिमरिया घाटक हैजा जकाँ ओ थपड़ी भरि सभामे पसरि

(शेष पृष्ठ ३० पर)



दोसर नहि होइछ । अतः एही अवसरपर लोक गया जाय पितरके पिण्डदान करैत छथि एवं प्रतिपदासँ लऽकऽ अमावास्या पर्यन्त अपन पितरक मृत्युतिथिने ब्राह्मण भोजन करबैत छथि । ई मनोवैज्ञानिक सत्य थिक जे हम जनिकर स्मरण श्रद्धासँ करैत छियनि, हुनक पुण्य स्मरण अपन चारित्रिक गुण-दोषक निरीक्षण करबाक हेतु प्रोत्साहित करैत अछि, हम आत्म-निरीक्षण करैत छी, दोषक परिहारक हेतु सचेष्ट होइत छी । स्मृति मानस-पटलपर एक चिन्तनक छाप मारि दैत छैक ।

‘इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत् पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका’
कृष्णपक्षक अष्टमी स्त्रीवर्गक हेतु पुत्र-सौभाग्यदात्री होइत अछि तँ जीव-पुत्रिका कहबैत अछि ।

जीमूत वाहन व्रत कथा प्रसङ्ग भगवान श्रीशंकर पार्वती मातासँ कहैत छथिन—

“आश्विने कृष्ण पक्षे तु या भवेदष्टमी तिथिः पूजयन्ति स्त्रियस्तस्यां पुत्रकामाः सहर्षिताः”

तँ तँ जखन कोनो महान संकटसँ लोक बाँचि जाइत अछि तँ लोक कहैत छैक माय खरजितिया कयने छलथिन तँ बँचलाह ।

आइ प्रयोजन भऽ गेल अछि जे नवीन दैवी-शक्तिक प्रादुर्भाव हो, दानवी मायाक अंत हो, संसारसँ लुप्त होइत मानवताक रक्षार्थ सृष्टि-स्थिति-विनाशक हेतु भूताभयापहारिणी भूत-भावनी भगवती भैरवीक आह्वान हो ।—प्रस्तुत लेखमे एही भावनाक संग वर्तमान दुःस्थितिक चित्रण उपस्थित करैत शांति रूप भगवतीक आह्वान कयल गेल अछि ।—सं०

ई तँ भेल कृष्णपक्षक विशेषता । शुक्ल पक्षमे प्रतिपदासँ कलश स्थापन भऽ जाइत अछि, घरे-घर गोसाउ-निक विशेष रूपेँ पूजा आरम्भ भऽ

श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’

वायु-पुराण ओ भविष्य-पुराणमे कृष्ण-

ईश्वरक प्रति आस्था रखनिहार भारतीय हे कतु आश्विन मास बड़ पवित्र ओ आदरणीय मास थिक । शरद एही ठामसँ आरम्भ होइछ । ओना, प्रत्येक मासमे कोनो-ने-कोनो धार्मिक उत्सव—पावनि अवश्य होइत अछि, किन्तु आश्विनक दूनु पक्ष क्रमतः पितर ओ देवीक आराधनामे लागि जाइछ । ई दूनु-कृष्ण ओ शुक्ल-पक्ष हमरालोकनिक सांस्कृतिक जीवनमे बड़ उच्च स्थान रखैत अछि—

ब्रह्म पुराणक वचन अछि—
आश्विने कृष्णपक्षे तु
श्राद्धं देवं दिने दिने ।
त्रिभागहीन पक्षं वा
त्रिभागं त्वद्धमेव वा ॥

मनुक उक्ति छनि—‘श्राद्धे प्रशस्तास्तितथो यथैता न तथैतराः’
—श्राद्धक हेतु एहन प्रशस्त तिथि

पक्षक प्रतिपदासँ लऽ चतुर्दशी वर्जित अमावास्या पर्यन्तक प्रत्येक तिथिक भिन्न-भिन्न फलक वर्णन कयल गेल अछि । चतुर्दशी वर्जित अछि । ओ तिथि केवल शस्त्रसँ मारल गेल लोकक श्राद्धक हेतु निर्धारित अछि ।

माताक स्नेह सर्वोपरि होइत छैक—कुपुत्रो जायेत वचिदपि कुमाता न भवति—तँ मातृनवमी पितृपक्षक एक विशेष तिथि थिक । मातृनवमीक दिन कोन एहन हिन्दू होयत जे अपन मुइल माइक स्मरणमे ब्राह्मण-भोजन नहि करबैत हो । एमहर जहिना सन्तान मुइल माइक प्रति श्रद्धा अर्पित करैत अछि तहिना जीवित माता अपना सन्तानक कल्याण कामनासँ जीमूतवाहन (जितिया) व्रत करैत छथि । भविष्य-पुराणमे कहल अछि—



महिषासुर-वध नृत्य-रूपकमे श्रीमती कल्पना ओ श्री विश्वनाथ मिश्र

जाइत अछि । एहि पूजाक विशेषता ई अछि जे सभ वर्णक लोककेँ ई पूजा करबाक अधिकार धर्मशास्त्रे दऽ देने छैक । हेमाद्रिमे लिखल अछि—

“पूजनीया जनैदेवी
स्थाने स्थाने पुरे पुरे
स्तातः समुदितं हृष्टं -
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपै-
वंश्यैः शूद्रैर्भक्ति युक्तं
म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः”

शक्तिक उपासना यावत् राष्ट्रक सभ अङ्ग नहि करतैक तावत धरि राष्ट्र सबल रहतैक कोना ? ई शक्ति वैयक्तिक शक्ति नहि, सामूहिक शक्ति थिक । दुर्गा सामूहिक शक्तिक प्रतीक थिकीह ।

सात्त्विक भाव रखनिहार देवता-लोकनि असुरगणसँ परास्त होइत गेलाह, इन्द्र पर्यंतक आसन छीनि लेलकनि । ब्रह्मा, विष्णु, महेशक केन्द्रीय मंत्रिमण्डल डोलि गेलनि तखन—

ततोऽतिकोपिपूर्णस्य
चक्रिणो वदनात्ततः ।
निश्चकाम महत्तेजो
ब्रह्मणः शंकरस्य च ।
अन्येषां चैव देवानां
शक्रादीनां शरीरतः
निर्गतं सुमहत्तेज-
स्तच्चैक्यं सम गच्छत ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र आदि समस्त देवताक शरीरसँ निर्गत जे तेज वैह तेजपुंज दुर्गा थिकीह । एहन सामूहिक शक्तिक उपासना म्लेच्छ पर्यन्त करबाक अधिकारी अछि । अर्थात् राष्ट्रक प्रति उत्तरदायित्व समाने छैक तँ एहि अधिकारसँ क्यो चिबंत नहि राखल जा सकैत अछि ।

एही शक्तिक उद्घोष थिक—
“इत्थं यदा यदा बाधा
दानवोत्था भविष्यति
तदा तदाऽवतीर्याहं
करिष्याम्यरिसंक्षयम्” ।

आइ यदि संसारक स्थितिपर

‘तऽर पट्टा-ऊपर पट्टा’ धारावाहिक उपन्यास
एहि अंकमे नहि जा रहल अछि । अग्रिम अंकमे
ओकर अन्तिम अंश जायत । अर्थात् २२ अक्टूबर-
क अंकमे ओ समाप्त भऽ जायत । —सम्पादक

दृष्टिपात करैत छी तँ स्पष्ट परि-
लक्षित होइत अछि जे विज्ञानक क्रमिक
विकास देखि मनुष्यक हृदयसँ दैवी
शक्तिक विश्वास उठल जा रहल
छैक । प्रकृतिक रहस्य सभक जँ-जँ
उद्घाटन भेल जा रहल छैक, मनुष्य
ततेक बेसी दैवी-शक्तिक उपहास
कयने चल जा रहल अछि । आधि-
भौतिक विकासक आगाँ आध्यात्मिक
विकासक चर्चा पाखण्डक प्रतीक मानल
जाय लागल अछि । फलतः धर्मक
प्रति अविश्वास, चारित्रिक विकासक
प्रति उदासीनता, नैतिक आचरणक
प्रति अवहेलनाक भाव ओ सांसारिक
सुखोपलब्धिक प्रति अनुराग लोकमे
बढ़ल जा रहल छैक ।

एक दिस शांति स्थापनाक दिशा-
मे जनमत जगयबाक प्रयास शांति
चाहनिहार संसारक नेतालोकनि
कऽ रहल छथि आ दोसर दिस आसुरी
शक्तिक भयानकताक प्रदर्शन भऽ
रहल अछि । शांति दूत छद्मसँ मारल
जाइत छथि । आइ वस्तुतः सात्त्विक
भावक पतन ओ आसुरी भावक
उन्मेष भऽ रहल अछि । समस्त विश्व-
पर वक्र दृष्टि गड़ौने कतेक चण्डमुण्ड,
धूम्रलोचन, रक्तबीज, शुम्भ-
निशुम्भ अखाड़ापर टाल ठोकि रहल
अछि । आइ मैथिल कोकिल महाकवि
विद्यापतिक स्वरकेँ मुखरित होयबाक
काल पहुँचि गेल अछि—‘जय जय
भैरवि अमुर भयाउनि पशुपति
भामिनि माया ।’

आइ प्रयोजन भऽ गेल
अछि जे नवीन दैवी शक्तिक
प्रादुर्भाव हो, दानवी मायाक अंत हो,
संसारसँ लुप्त होइत मानवताक रक्षार्थ
सृष्टि-स्थिति-विनाशक हेतु भूत-
भयापहारिणी भूतभावनी भगवती
भैरवीक आह्वान हो । आइ यदि शांति
प्रिय सात्त्विक भावक उपासक संसा-
रक सभ नेता अपन शक्तिक समन्वित
सृष्टि नहि करताह तँ संसार महा-
नाशक कछेड़ धरि पहुँचि गेल अछि,
कोनो क्षणमे विनाशक महागर्तमे
खसि सकैत अछि । कारण आइ—
‘या देवी सर्व भूतेषु भ्रान्ति रूपेण
संस्थिता नमस्तस्यै’क पाछाँ समस्त
संसार लागल अछि । विज्ञानक प्रगति,
निश्चयतः मानव-जीवनमे सुख शांतिक
उपलब्धिक हेतु होइत अछि, किन्तु
एही भ्रान्तिक कारणेँ आसुरी
भावक अभिवृद्धि भेल जा रहल अछि ।

(शेष पृष्ठ १७ पर)



करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः



मिथिलाक नारी

सुश्री मालती ओझा

अपनालोकनिक समाजमे नारी वास्तवमे मिसरीक चेप थिकीह । जाहि प्रकारे देखल जाय, नारी माधुर्यसँ सदैव भेटतीह । माता वा पत्नी दुहु रूपमे नारीक हृदयमे कोमलता, सहिष्णुता, त्याग, संयम आदि आदर्शक कलकलनिनादिनी सरिता सतत प्रवाहित रहैत आयल छैक । वास्तवमे देखल जाय तँ परिवारक अस्तित्व नारियेक अस्तित्वपर आधारित छैक । आर जखन परिवार नहि, तखन समाजक घटन कथी लऽकऽ ? तँ ई निर्विवाद अछि जे समाजक मूल भित्ति नारी थिकीह । नारीयक त्याग-तपस्या एवं कोमलताक आधारपर मानव समाज कायम अछि ।

हमरा जनैत नारी प्रेम आर त्यागक मूर्ति थिकीह जे अपनाकेँ भेटाय अपन मूक सहिष्णुतासँ, अपन त्यागसँ अपनाकेँ सोलहो आना भेटाय, पतिक आत्माक एक अंग बनि जयबाक सतत चेष्टामे रहैत छथि । एतऽ ई स्पष्ट कहने दोष नहि मानल जाय जे पुरुषमे अपनाकेँ भेटा देबाक सामर्थ्य नहि छनि, ओ जँ अपनाकेँ भेटयबो करताह तँ ओ शून्य भऽ जयताह । ओ कोनो पहाड़क खोहमे जा बैसताह आ सोझ-सोझ ब्रह्म-साक्षात्कारक स्वप्न देखऽ लगताह । ओ अपन अहंकारमे अपनाकेँ ज्ञानक मूर्ति बूझि परमात्मेमे लीन भऽ जयबाक कल्पना करऽ लगताह ।

नारी पृथ्वी जकाँ धैर्यमती थिकीह, शान्तिस्वरूपा थिकीह, सहिष्णुताक पराकाष्ठा थिकीह । नारीक

अभावमे पुरुषक अस्तित्वे नहि रहि जयतनि । नारियेमे ओ शक्ति स्थित छैक, जाहिसँ पुरुष कायम रहैत छथि । कहल गेल अछि जे— “नारीक मध्ये रयेचे एकटि रसेर प्रकृति आह्लादिनी शक्ति, से शक्ति पुरुषेर मध्ये स्फुरित केर आनन्द, अनुप्रेरणा—मन्दिरेर निद्रित देवतार काने-काने बले जागरण गान, येसन नदीर पथे नामे वर्षार दल, तार सर्वांग आने वेग, तोले जोयार, ताके सक्रिय करे, छूटिये नये चले परम लक्ष्येर दिके । एइ आह्लादिनी शक्तिर भाषान्तर दृष्टि चार्म (Charm) । चार्म (Charm) थेकेइ उत्पत्ति हय रोमान्स (Romance) ।

यद्यपि नारी मे एतेक गुण निहित छनि परंच लोकोक्ति छैक जे बाड़ीक पटुआ तीत । एहन आदरणीया तँ नारी छथि, मुदा पुरुषक मने हुनक किछ महत्व नहि । नारीकेँ पुरुष कनेको लोक कऽकऽ नहि बुझैत छथिन । जे नारी पुजबाक योग्य कहल गेल अछि, ओहि देवीक संग पुरुषक तुच्छसँ तुच्छ व्यवहार होइत छनि । जाहि नारीकेँ पुरुष अपन जीवन-संगिनी—अपन अर्धाङ्गिनीक रूपमे ग्रहण करैत छथि, हुनका संग पुरुष पशुए तुल्य व्यवहार करैत छथिन । नारीकेँ गायक संज्ञा देल गेल आर गायसँ जेहन व्यवहार होइत अछि तहिना नारियोसँ कयल गेल । पुरुष नारियोकेँ निमुह धन मानऽ लगलाह । नारीक भावनाकेँ पुरुष थकुचि देलनि आर नारीकेँ अबलाक संज्ञा दैत-दैत वास्तवमे नारी अवले बना देल

गेलीह । ओ अपन अस्तित्वकेँ विसरि गेलीह । नारीक सभ सद्गुण हुनक दुर्बलतामे परिणत भऽ गेल । नारी अपनाकेँ वास्तवमे पुरुषक नौड़ी बूझि लेलनि । नारी पुरुषकेँ देवता बूझि अपन तन, मन, धन अर्पित करऽमे कोनो कसरि नहि रखलनि, परंच एकर वरदानस्वरूप हुनका ओहि देवतासँ की भेटलनि तँ पुरुषक मारि गारि टा । बेचारी नारी कने नीक बोल सुनऽ लेल, कने स्नेह पावऽ लेल तरसैत रहैत छथि । कहल जाइत अछि जे जीवनयात्राक रथ स्त्री-पुरुष दुहुक योगसँ चलैत अछि, ताहि स्थानपर पुरुष रथक एकटा पहिया नहि बनि स्त्रीकेँ ओहिमे जोति अपने मुहरापर बैसि टिटकारी दऽ कऽ टिकटिका रहल छथि । बेचारी नारी तँ सहजे अबले अछि, मरि तँ सकैत अछि नारी, परंच किछु नहि कहि सकति । नारीक सभसँ महान् शक्ति छैक सहनशीलता आ सभसँ महान् असरा छैक ओकरा अपन नोरक । एही दुहुक अवलम्बन कऽ नारी पुरुषक सभ आघातकेँ सहैत गेलीह । परंच कोनो अन्याय तँ अधिक दिन धरि नहि रहैत छैक । नारीमे चेतनाक संचार भेलनि । कतहुसँ प्रोत्साहनक प्रकाश भेटलनि । तखन नारी सजग भऽ कऽ देखलनि जे पुरुषलोकनि युग-युगान्तसँ कोन प्रकारे हुनका प्रति अन्याय करैत आबि रहल छथिन, कोन दशामे नारीकेँ पहुँचा देने छथिन । ई देखि नारी हाहाकार कऽ उठलीह, अपन अवस्था देखिकऽ ओ अपन माथ उठौलनि ।

यद्यपि नारीमे चेतना अयलनि अछि आ ओ सजग भऽकऽ बाटपर अयलीह अछि, परंच ओ बाट चौ-टिया छल जतऽ आदिकऽ नारी चक-चोन्निमे पड़ि गेलीह । हुनका बाट देखावऽ बला पुबरिया बाट छोड़ि पछबरिया बाट धरा देलथिन । नारी ओहि बाटकेँ अपनाकऽ पश्चिमक

बिहाड़िमे पड़ि गेलीह, जे कि हमरा-लोकनिक वास्ते कनेको उचित नहि । एकरा अपनोने नाशक चरम सीमापर पहुँचो बिना कोनो उपाय नहि । ओहि परिस्थितिक कल्पने कऽकऽ काँपि जाय पड़ैत अछि । तरहत्थीस आँखि मूनि लेबऽ पड़ैत अछि, ओतुका पारिवारिक उसामंजस्य देखिकऽ । तखन ओकर नकल कऽकऽ जे स्त्रीगण साइकिल चलायव आ मोटर चलायव प्रारम्भ कयलनि अछि से कहाँ धरि उचित थिक । नारीकेँ एहि बातपर ध्यान देबाक चाहियनि आ चाहियनि जे अपने बाट धऽ चलथि ।

या देवी सर्वभूतेषु

(पृष्ठ १५ क शेषांश)

जाहि कारणे ई विज्ञानक प्रगति विनाशक निमित्त भेल जा रहल अछि ।

संसार भने नास्तिक भऽ जाओ, मुदा भारतीय दर्शन ओहि अलौकिक सत्ताकेँ सभ दिनसँ स्वीकार करैत आयल अछि, जाहि बले सूर्य, चन्द्र ओ समस्त नक्षत्र मण्डल उद्भासित होइत आबि रहल अछि आ धर्मक ग्लानि जखन भेलैक अछि तखन-तखन ओहि शक्तिक उद्घोष होइत रहल अछि—

यदा यदा हि धर्मस्य

ग्लानिर्भवति भारत

अभ्युत्थानमधर्मस्य

तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

भारतवर्षक स्थिति तँ आरौ भयावह देखि रहल छी । चारू भागसँ आतंकित सीमा क्षेत्र आ आन्तरिक स्थिति—या देवी सर्व भूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता—चारू भाग क्षुधाक प्रचण्ड ताण्डव देखि रहल छी । साले-साल महा अकाल विकराल रूप धारण कयने जा रहल अछि आ क्षुधापीडित कतोक जन महाकालक सर्व प्रास बनि रहल छथि ।

जे लोकनि जनताक सुख-दुःख, सुविधा-दुविधाकेँ उचित रूपेँ शासन- (शेष पृष्ठ १८ पर)

सहजो पीसीक चरखा



ओहि दिन मने सप्तमी रहेक । सहजो पीसी अन्हरोखे उठलीह, घर-आड.नकेँ झाड़लनि-बहारलनि, खूब चिक्कन-चुनमुन कऽ निपलनि आ फुलडाली लऽकऽ विदा भेलीह फूलक भाँजमे । जखन ओ नित्या बाबूक सिड.रहारक गाछ-तऽर पहुँचलीह तँ एकदमसँ चेन-चाक छल । कथी लेल एको गोटे चिड़ैयो-चुनमुनीक दर्शन होयतनि । सभ छौंड़ा-छौंड़ीसभ एक-एकटा फूल लोढ़ि-बीछि निपत्ता भऽ गेल छल आ छोड़ि गेल छल सिड.र-हारक फूलक मारते रास उज्जर-उज्जर पत्ती आ खड़-पात । ई दृश्य देखि सहजो पीसीक तरबाक लहरि मगज ठेकि गेलनि । कहूँ तँ, अनदिना रहितैक तँ दू-चारिटा कनैल आ कि करवीरक फूलसँ गोसाउनकेँ परतारि देल जैतनि, मुदा भरल दशमीमे गोसाउन कतहु उधार रहथि ! जा भरि डाली फूलसँ गोसाउनकेँ झाँपल नहि गेल, दू-चारि टा माला गाँथि-कऽ हुनका पहिराओल नहि गेल ता दशमी भेल कोना ! सहजो पीसी बड़बड़ायब शुरूहे कयने छलीह कि कोन दन छौंड़ा पाछाँसँ टोकि देल-कनि—‘पीसी, तकैत की छी, सभ फूल तँ छौंड़ीसभ लऽ गेलि । फूलक पियरका डंडीक ओ सभ रंग बनाओत आ उजरी पत्तीकेँ गारिकऽ बिन्दी । ओकरा सभकेँ पूजा-पाठक चिन्ते कोन ?’

एतबा कहब छल कि जेना उठैत धधरापर आर सवा सेर धी पड़ि गेल । सहजो पीसीक चरखा रनरनाय लागल—‘सतबढ़ना लऽकऽ झाँटू धोछिया सभकेँ । माइक पेटसँ बह-रायल नहि कि सखेसभ सूझऽ लगैत छैक । जेना हमरालोकनिकेँ सखे

नहि छल, जेना हमरालोकनि सिड.रे-पटार नहि करैत रही । जेहने पपि-याहा ई कलियुग आबि तुलायल, तेहने छौंड़ीसभ कलियुगाहि भऽ गेलि अछि ! कहूँ तँ, हमर गोसाउन ओहिना रहथु भरला दशमीमे आ छौंड़ीसभकेँ बिन्दी सुझलैक अछि ? हे भगवती, जानी अहाँ, हमर कोनो दोष नहि; जे छौंड़ीसभ हमरा निराश कयलक अछि, तकरा सभकेँ अहीं देखबैक ।’

सहजो पीसीक ओहि दिनुका भिनसर तँ एहिना रनरनाइत वित-लनि, साँझखन ओ आर ताल लगा देलनि । बात ई भेलैक जे साँझ खन गामक नव-नौतारि धी-बेटी सिड.रे-पटार कऽकऽ सहजो पीसीक ड्योढ़ीक आगाँ दऽकऽ विदा भेलि दुर्गाजीक दर्शन करऽ । ओ सभ उमंगमे छलि आ तँ मेही ठोंठसँ नहूँ-नहूँ गीतो गवैत चल जाइत छलि । गीतक भास सहजो पीसीक कानमे पड़लनि कि अड.रेर भऽ गेलीह । हरलनि ने फुरलनि, ओ चूरा कूटऽबला ठोड.र लऽकऽ ओम्हरे दौड़लीह । ओकरा सभमेसँ कयो सहजो पीसीकेँ ‘अग्निश्च वायुश्च’ होइत अबैत देखलकनि तँ दूरेसँ टोक देलकनि—‘पीसी, कोनो माल लत्ती-झाड़ी खा लेलक अछि की ?’

ओ कने हँसिकऽ बाजलि छलि तँ ओकरेपर ललकैत सहजो पीसी बजलीह—‘अलच्छी सभ नहि तन ! गय, एको रत्ती लाज होइत छौक तोरासभकेँ ? जाइत छे भगवतीक दर्शन करऽ आ गबैत छे सिनेमाक गीत ? गय, एही मुँहसँ ‘जय जय भैरवि’ गयबेँ से नहि होइत छौक ?’

मुँह दुखाइत जाइत छौक गोसाउनक गीत गावऽमे ?’

दोसर कयो कहलकनि—‘पीसी, सिनेमाक भास छैक तँ की ? छैक तँ ईहो भगवतियेक गीत ने ?’

सहजो पीसी ठोड.र लऽकऽ अपने कपार पिटैत कहलथिन—‘गय, धोछिया सभ, गय, तो’ सभ की बुझबही । बगुला जँ हंसक चालि चलैत अछि तँ अपनो चालि विसरि जाइत अछि । अपन भास जँ तोरालोकनि छोड़ि देबेँ तँ तोरा चिन्हतौक के जे ई मैथिलानी अछि । हम एक बेर जगरनाथ जाइत रही तँ अपने भासमे गीत गबैत रही । ओड़िया सभकेँ ततेक सोहयलैक जे बेर-बेर गावऽ कहलक । गय, अनका तँ हमरालोकनिक भास नीक लगैत छैक आ तोरा सभकेँ तीत लगैत छौक ? इबि मर चुड़ू भरि पानिमे । सभ लाज-धाख धसोटि गेले’ आ किदन कहैत छैक, पतुरिया जकाँ छमकऽ विदा भेलेहें । जँ नीक चाहैत छेतँ अपन चालि चल, ने तँ एकदिन एहि ठोड.र लऽकऽ सभक चानि तोड़ि देबौक ।’

सभ अपनांमे इसारासँ गप्प कयलक आ एक गोटे कहलकनि—‘पीसी, आव हमरालोकनि कहियो सिनेमाक गीत नहि गायब ।’

कनेके कालमे एक टा छौंड़ी टाहि उठौलक—‘जय-जय भैरवि असुर भयाग्रोनि, पशुपति भामिनि माया ।’ सहजो पीसी सेहो ओहि भासमे अपन कंठ मिझड़ा लेलनि ।

या देवी सर्वभूतेषु

(पृष्ठ १७ क शेषांश)

यंत्रक समक्ष उपस्थित करबाक हेतु प्रतिनिधित्व करऽ जाइत छथि ओ—

‘या देवी सर्व भूतेषु जाति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै मे डूबल छथि । जनताक प्रतिनिधित्व तँ होयबाक चाही सेवा बुद्धि, से भऽ रहल अछि—‘या देवी सर्व भूतेषु वृत्ति रूपेण संस्थिता’ ताहि बुद्धि । एम्० ए० धरि शिक्षाग्रहण कयलाक बादो दुआरिएँ-दुआ-रिएँ छाउर छानऽ पड़ैत छैक आ जनताक प्रतिनिधित्व जँ भेटि गेल तँ जी० जी० एम्० पी० (धोचि धाचि-कऽ मिडिल पास) पर्यन्त अढ़ाय सय टाका मासिक वेतन आ पन्द्रह टाका दैनिक भत्ता पावय लगैत छथि । तखन क्रमशः—‘या देवी सर्व भूतेषु तूष्णा रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै’ दिस चित्त लटकल रहैत छनि ।

एहना स्थितिमे देश समाज विश्व-सभ ठाम एक भयंकर विषमता मुँह बौने सभक आगाँ ठाढ़ अछि । विकल मानवता कुहरि रहल अछि, धर्मक चारू पयरमे खंडा पकड़ि लेलकनि अछि ।

ई शा रदीय नवरात्र हमर गौरवक विजय - वैयन्तीक स्मरण करबैत अछि । मानवता आइ पुनः रोग-ग्रस्त अछि आ महाकवि श्री सुमनजी शरदकेँ बैद्य कहलनि अछि—

‘शरद बैद्यकेर चरण धरथु बह मरण शरण एके अछिलाघव’ से मान-वताकेँ रोग-मुक्त करबाक हेतु आइ धर्मप्राण देश भारतकेँ ई चिन्तन करबाक छैक जे ई संसार कोन प्रकारेँ—‘या देवी सर्व भूतेषु शांति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः’—दिस अग्रसर भऽ सकत, तकर मार्ग ताकि कऽ बाहर करय ।

शिक्षा शब्दसे साधारणतः ओहि

क्रियाक बोध होइछ, जाहि क्रियासे मनुष्य अपनाके समाजक उपयुक्त बनयबामे सक्षम होइत अछि। व्यक्ति-क व्यक्तित्व विकसित होइत छैक शिक्षा द्वारा, तँ शिक्षित मनुष्य अशिक्षितक अपेक्षा अधिक सम्य मानल जाइछ। आशय ई जे नैसर्गिक मनो-विकारपर नियन्त्रण रखबाक हेतु जाहिद्वाराविवेकके हम उदबुद्ध करैत छी सँह शिक्षा थिक। शिक्षा ने लेल जा सकैत अछि ने देल जा सकैत अछि। ई तँ एक प्रकारक अभ्यास थिक, जकर मनन ओ चिन्तन जतेक अधिक करैत जायब, हमरा संस्कारमे, हमरा स्वभावमे ततेक परिष्कार भल जायत, हम जतेक 'स्व'क परिधिसँ ऊपर उठैत जायब आ 'स्व'क परिधिसँ जतबा ऊपर उठि सकब, हमर सामाजिक महत्त्व ततबे बेसी भेल जायत। तँ यदि शिक्षाके हम एक चेतना कही तँ कोनो अनर्गल नहि होयत। मनुष्यके प्रकृति द्वारा सबसँ विशिष्ट वस्तु जे उपलब्ध भेलैक से ओकर ताकिक बुद्धि। आत्म-रक्षा अथवा स्वपालनक चेतना प्राणिमात्रमे देखल जाइछ— 'आहार निद्रा भय मँथुनञ्च समान मेतत्पशुभिर्नराणाम्'। परन्तु ताकिक बुद्धिमे मनुष्य पशुसँ भिन्न भऽ जाइत आ ओही ताकिक बुद्धिके उदबुद्ध करब, ओहिमे चैतन्य आनब शिक्षा थिक। ताकिक बुद्धि स्व-रक्षाक प्रयत्न मात्रक हेतु ततेक आवश्यक नहि, कारण जे आत्म-रक्षाक कला एक टा उड़ीसो जनैछ। तँ शिक्षाद्वारा मनुष्य अपनाके समाजक अनुकूल, मानव जातिक कल्याण करबाक उपयुक्त बनबैत अछि। आरंभ कालमे अन्य वन्य पशु जकाँ मनुष्यो जीवन-यापन करैत छल, क्रमहि ओकर ताकिक बुद्धि प्रकृतिक रहस्य दिस उदबुद्ध भेलैक आ ओ नवीन दृष्टिकोण लऽ प्रकृतिके देखब आरंभ कयलक। एहि सुदीर्घ कालक अनवरत अध्यवसायक फलस्वरूप आइ

मनुष्यता ओ शिक्षाक सम्बन्ध

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

अन्तरिक्षक यात्राकऽ मनुष्य सकुशल पूरि आयल अछि। यँह थिक शिक्षा जे आइ मनुष्यक ओहि ताकिक बुद्धिके ततबा चैतन्य बना देलक अछि जे जल, स्थल, आकाश सभपर मनुष्यक विजय वँजयन्ती फहरा रहल छैक। एही आधारपर हम ईहो कहि सकैत छी जे शिक्षा कोनो जड़ वस्तु नहि, जे ताजमहल वा कुतुब-मीनार जकाँ एक बेर एक ठाम जाहि रूपमे ठाढ़ कऽ देलैक, ठाढ़ रहि गेल, अपित शिक्षा गतिशील अछि, एक प्रकारेँ एकरा-चेतन कहि सकैत छिऐक। यदि मान-

यदि मानवक चिन्तन-शक्ति कमलक फूल थिक तँ शिक्षा सूर्यक ओ रश्मि जकरा संयोगेँ कमल विकसित भऽ उठैत अछि। ...सम्प्रति जाहि भौतिक युगसे मानवजाति आगाँ बढ़ि रहल अछि, एहि युगमे शिक्षाक मूल उद्देश्य जीविकोपार्जन मानल जाइछ। ...यदि शिक्षा पाबियोकऽ लोक परिस्थितिके अपना अनुकूल नहि बना सकय आ स्वयं अपनाके परिस्थितिक अनुकूल बनयबाक हेतु मनुष्यके बाध्य होमऽ पड़ैक तँ ओ ओ शिक्षा नट्ठा गायक समान थिक, जकरा लोक पोसैत अछि दूधक लोभे, मुदा ओहि गायसे उपलब्ध होइत छैक गोबर-मात्र। --एही प्रकारक विचार-भूमिमे विचरैत लेखक शिक्षाक साधकतापर सम्यक् प्रकाश देलनि अछि। --स०

वक चिन्तन-शक्ति कमलक फूल थिक तँ शिक्षा सूर्यक ओ रश्मि जकरा संयोगेँ कमल विकसित भऽ उठैत अछि। एहि प्रकारेँ विचार कयला उत्तर ई सिद्ध होइत अछि जे शिक्षा कोनो एक अवस्थाक सीमामे कसल नहि रहैछ, अपितु मनुष्यक प्रत्येक अवस्थाक हेतु सामान्य महत्त्व रखत अछि। नेना हो वा बूढ़, स्त्री हो वा पुरुष, समस्त जीवनमे ओ शिक्षा ग्रहण करैत रहैत अछि।

ई तँ भेल शिक्षाक तात्पर्य। आब हमरा शिक्षाक उद्देश्यपर सेहो विचार करक चाही। ई पहिने स्पष्ट भऽ चुकल अछि जे शिक्षा मनुष्यक ताकिक-

चेतनाके ताहि रूपेँ उदबुद्ध करैत छैक जाहिसँ ओ समाजक कल्याणक उपयुक्त अपनाके बना सकैत अछि, परन्तु एक चोर अपना उत्तराधिकारीके सेहू कटबाक शिक्षा दैत छैक, एक भिखारी अपना धीया-पूताके भीख मड-बाक कलामे पारंगत बनबाक शिक्षा दैत छैक, तँ की ईहो समाजक कल्याणक उपयुक्त बनयबाक प्रयास कहल जा सकैछ? यदि नहि तँ की एहि प्रकारक शिक्षा, शिक्षाक कोटिमे नहि आबि सकैछ? उत्तर सहज अछि। शिक्षा तँ ईहो अवश्य भेल, परन्तु

उद्देश्य दूषित। अतः शिक्षाक उद्देश्यपर सेहो थोड़ेक विचार करब आवश्यक।

सम्प्रति जाहि भौतिक युगसे मानव-जाति आगाँ बढ़ि रहल अछि, एहि युगमे शिक्षाक मूल उद्देश्य जीविकोपार्जन मानल जाइछ। जीवन एक संघर्ष थिक। एहि संघर्षमे मनुष्यके अनेक प्रकारक कठिनाता ओ प्रति-द्वन्द्वीक संग अपन शक्तिक प्रदर्शन करऽ पड़ैत छैक। एहना स्थितिमे शिक्षाके एहि प्रकारक साधन बनय-बाक प्रयास चलल जे शक्तिक प्रदर्शनमे शिक्षा सहायक हो आ एही सभ कारणे शिक्षाक मूल उद्देश्य आइ जीविकोपार्जन बनि गेल अछि।

साधारणतः कहल जाइछ जे मनुष्य परिस्थितिक दास होइत अछि। जाहि प्रकारक परिस्थितिसँ ओ घेरा जाइत अछि तदनुकूल ओकरा अपन आचरण करऽ पड़ैत छैक। हमर अल्प-बुद्धिये शिक्षा एही परिस्थितिक दासतासेँ मुक्तिक एक सर्वश्रेष्ठ साधन थिक। यदि शिक्षा पाबियोकऽ परिस्थितिके अपना अनुकूल नहि बना सकय आ स्वयं अपनाके परिस्थितिक अनुकूल बनयबाक हेतु मनुष्यके बाध्य होमऽ पड़ैक तँ ओ शिक्षा नट्ठा गायक समान थिक, जकरा लोक पोसैत तँ अछि दूधक लोभे, मुदा ओहि गायसे उपलब्ध होइत छैक गोबर मात्र। अतः परिस्थितिक दासतासेँ मुक्तिक साधनके यदि शिक्षा कही तँ शिक्षाक साधकता सिद्ध होयत। कविवर श्री सीताराम झा एक ठाम कहने छथि—

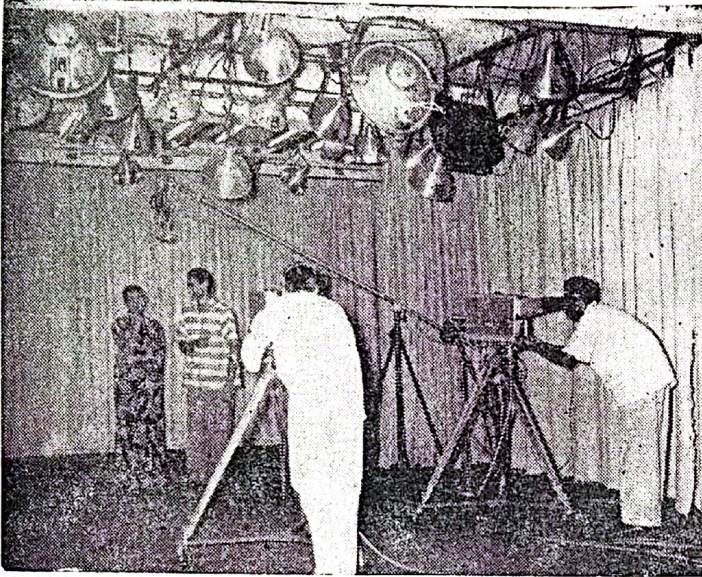
“शिक्षा शब्दक अर्थ थिक सीखब उत्तम ज्ञान निज धर्मक पालन तथा परमेश्वर पद ध्यान एहि पदमे धर्म शब्दसे कविक तात्पर्य गंगास्नान अथवा एकादशी व्रतसे नहि छनि, अपितु मनुष्यक धर्म भेलैक मनुष्यता; अर्थात् मनुष्यता-प्राप्ति शिक्षाक मूल उद्देश्य बूझक चाही।

विलायतक सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हरवर्ट स्पेन्सर शिक्षाक उद्देश्य जीवनक पूर्णताके कहैत छथि। जीवनक पूर्णता मनुष्यताक पूर्ण विकासके कहल जा सकैत अछि।

जर्मनीक प्रसिद्ध शिक्षा विशेषज्ञ हरवार्ट शिक्षाक उद्देश्य स्पष्ट करैत चारित्रिक संघटन ओ नैतिक विकासके महत्त्व देलनि अछि। चरित्रक महत्त्व जीवनमे सर्वोपरि अछि आ ओकर पूर्ण संघटन बिनु नैतिक विकास संभव नहि। तहिना, नैतिकता मनुष्यताक दोसर नामके कहि सकैत छी। मानसिक दुर्बलता, सामाजिक अथवा अन्य प्रकारक उत्पन्न कोनो परिस्थि- (शेष पृष्ठ २२ पर)

माठा संचय

टेलीवीजनक प्रक्रियामे



टेलीवीजन-सेवाकेँ चालू करैत काल आकाशवाणी केन्द्रमे जे प्रयोग भेल छल, ई चित्र तबतकेँ अछि । एहि चित्रमे टेलीवीजन स्टूडियोमे, जे कि दिल्लीमे अछि, कार्यक्रम आरंभ करबाक हेतु कलाकारलोकनिकेँ अभ्यास करैत देखाओल गेल अछि ।

हरियर इजोत

(पृष्ठ १४ क शेषांश)

ढोल-पिपहीक सड. हमरासँ वियाह करऽ आयल छल । हजारक हजार मुड़कट्टा सडमे अनने छल—मूड़ी कटल, तँयो छोपल गर्दनिसँ दस-दस हाथ ऊपर धधरा फेकैत छलैक । आ हाथ पकड़लएक तँ ओ कोकनल गाछ जकाँ टूक-टूक भऽ कऽ खसि पड़ल—एको रत्ती जीवनक सुगबुगी नहि, कंकाल मात्र । चलू ने, देखा दैत छी, धारक छेरेमे एखनो ओ ठठरी पड़ले होयतैक । मृत्युक छाँह जेना दिन-राति हमरा खेहारने घुरैत अछि । हम आब बाँचि नहि सकैत छी । हमरा स्त्रीहत्या लागि गेल अछि ।”

“त्रीहत्या ?”

“हँ । आइ सत्त कथा अहाँकेँ कहैत छी । हमर बियाह भऽ गेल छल । कयो करा देने छल से नहि, हम अपने देखि-सुनिकऽ कयने रही । मुदा ओकरासँ संबंध-विच्छेद भेना पाँच वर्ष भऽ गेल अछि । किएक नहि पटल से कहऽ लागब तँ बेसी दोष हमरे बूझि पड़त । ओ किछु दिन भेलैक अछि, विष खाकऽ प्राण त्यागि लेलक अछि । जबैतमे ओ हमरा आगाँ, शक्तिहीन छलि होयत, किन्तु आब ओ पल भरिमे हमर अस्तित्वकेँ, हमर संसारकेँ ढाहि सकैत अछि । हम ओकरासँ नुकाकऽ कतऽ रहि सकैत छी ? हमर अंत लगिचायल अछि । जखन मरब निश्चिते भऽ गेल अछि तँ एहि बोन-झाड़मे किएक मरब, गामपर सब गोटाक

बीच मरब । हमर मृत्युक सूचना भेटि जाय तँ वस्तु-जात गामपर पठबा देब, अथवा जे मोन हो से करब । हम चल-लहुँ ।”

आइ डेढ़ मासक बाद दूबेकेँ लगमे ठाढ़ देखैत छिएक तँ आँखि जेना पाथर भऽ जाइत अछि । एहन भकुना तँ ओ पहिनहुँ नहि छल । एक मिनट धरि दूनु गोटा एक दोसरा दिस तकैत रहि जाइत छी ।

“की औ, की हाल-चाल ? कोना-की ?”

“बहु नीक । एकटा वृक्षल कि ने, ओ जिविते अछि । अपना गामपर लऽ अयलएक अछि आब । ओ सब सभटा भ्रम छल । भूत कतहु वर्तमान भेलैक अछि !”

“जे किछु, मुदा एतेक दिन हरियर इजोत केवल ट्रेनकेँ टीसनपर पहुँचबैत छल, आब मनुष्यकेँ अपना टीसनपर पहुँचा दैत अछि, किने !”

दूबे हँसैत अछि । पैंटक जेबसँ एकटा फोटो बहार करैत अछि । हमरा देखाकऽ फेर ओकरा नुकबैत अछि । हम ओकरा हाथसँ फोटो छीनि लैत छी । देखैत छी ।

मनुष्यता ओ शिक्षाक संबंध

(पृष्ठ १६ क शेषांश)

तिक संग समुचित संघर्ष करैत रहबे तँ नैतिकता भेल जे मनुष्ये टा कऽ सकैत अछि तँ नैतिकता ओ मनुष्यता एके वस्तु भेल । एहू तरहें निज धर्मक पालन शिक्षाक उद्देश्य कहल जा सकैत अछि ।

अमेरिकाक सुप्रसिद्ध शिक्षा दार्शनिक डाक्टर जान डिवी शिक्षाक उद्देश्य मनुष्यक शारीरिक, मानसिक ओ नैतिक विकासकेँ मानैत छथि ।

नैतिक विकास तँ तखने संभव जखन मानसिक दुर्बलतापर विजय प्राप्त कयल जा सकय आ मानसिक दुर्बलता-पर विजय प्राप्त कयले सन्तान शारीरिक विकास संभव अछि; अर्थात् नीतिपर मन ओ मनपर शरीर अवलम्बित अछि । एहि दृष्टिये विचार कयला उत्तर शिक्षाक साक्षात् सम्बन्ध मनुष्यतासँ देखि पड़ैत अछि । वैदिक सिद्धांत तँ शिक्षाक उद्देश्य जीवनमे वासनाजन्य उत्पन्न दुःखसँ मुक्तिक मार्ग दर्शावकेँ मानैत अछि । वर्तमान युगक महा-मानव महात्मा गान्धीजी सेहो कहने छथि जे मुक्तिक योग्य बनावय से विद्या थिक, शेष अविद्या — “सा विद्या या विमुक्तये”

सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, मिल्टन, बेकन, मांट सोरी आदि महान शिक्षा दार्शनिकलोकनिक विचारकेँ एकत्र कऽ देखल जाइछ तँ मनुष्यताक दिस अग्रसर करबे शिक्षाक उद्देश्य मानल जाय, एही निष्कर्षपर पहुँचैत छी ।

परन्तु आइ विचारणीय प्रश्न सम्मुख अबैछ जे आजुक विज्ञान-युगमे जखन आइ मात्र पुस्तक अथवा सम्मुख ठाढ़ भऽ उपदेष्टा शिक्षक मात्रसँ नहि, अपितु रेडियो, सिनेमा आ सर्वोपरि टेलीवीजन द्वारा शिक्षा एतेक सुलभ भऽ गेल अछि, तथापि शिक्षाक मूल उद्देश्य भौतिक सुख प्राप्त मात्र भऽ रहल अछि । ई अवस्था मानव-जातिक हेतु सर्वथा चिन्तनीय थिक । शिक्षाक सम्बन्ध आध्यात्मिकतासँ अवश्य रह-बाक चाही, जाहिसँ मनुष्यताक विकास सम्भव होयत, अन्यथा ‘विद्या ददाति विनयम्’क अपेक्षा विद्यासँ अहंभावेक ग्रहण भऽ रहल अछि आ ई क्रम यदि रहल तँ “विनय विना गुण अछि सब तेहने जेहन लवण विनु व्यंजन” जे स्वर्गीय ‘जनसीदन’ जी कहने छथि, तदनसार मानव जातिक जीवनकेँ एहिना अनोन-विसनोन भेल महा-विनाशक गर्तमे लऽ जा पटक देत ।

एहि बेर डेढ़ वर्षपर कलकत्तासँ नेवारिकऽ फगुआक छट्टीमे गाम पहुँचलहुँ । गामक सिमानपर पयर दैत छी तँ बगड़िया कका अपना नारक टाललग ठाढ़ भेल एक पँजौरी नार टालमेसँ धिचने छलाह आ दोसर पँजौरी जे एक पाँज पुरयवामे घटी छलनि से पुरयवासँ पहिने प्रायः दूरमे एक्कापर चढ़ल अबैत हमरापर आखि, एक्कामे जोतल घोड़ाक गरामे बान्हल घुघरूक घनघनीसँ आबिकऽ अँटकि गेल छलनि से टकटकी लगौने हमरे देखि रहल छलाह । उतरिकऽ चट दऽ गोड़ लगलियनि तँ आशीर्वाद दैत बजलाह—बुझलह भातिज, बामठिमे ग्रह बितलापर अपनालोककेँ देखैत छिएक तँ मोनमे खुशीसँ गुदगुदी लागि जाइत अछि ।

हम पुछलियनि—बगड़िया कका, कहूँ अष्टग्रह लोक कोना खेपलक? अपना गाममे कोनो यज्ञ-जाप, पाठ-पूजा, अनुष्ठान-कीर्तन से सभ भेल की नहि ? हमरालोकनि तँ कलकत्ताक गलियारीमे रही, से बूझ प्राण उपर रहय, ताहूमे जखन एकवारमे पढ़िएक जे भऽ सकैत अछि भूकम्प हो, अगिलगनी हो, बाढ़ि आवय, बिहाड़ि आवय, कोनो बड़का नेता मरथि, युद्ध होअय, रक्तक नदी बहय तँ आन बातक ओतेक डर नहि होअय,



हो भातिज, अपना गाममे तँ..

बगड़िया ककाक अष्टग्रह

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' —

खाली पछिला भूकम्प जे मोन पड़य तँ कही जे जँ कनेको डोललैक तँ कलकत्ताक एही गलियारीमे लाश सड़ि जायत, गामक लोक बुझबोने करत जे जीवैत छी की मरि गेलहुँ ।

बगड़िया कका मन्दिग्ध दृष्टिँ तँ कतै छलाह जे हमर दृष्टि कतहुँ नारक टाल दिस तँ नै गेल अछि । कारण जे हमर बगड़िया कका भरि टोलक लोक जाहि ठाम नारक टाल लगबैत अछि ताही ठाम अनो टाल लगबैत छथि । ताकि-हेरिकऽ सवा सोड़हि, डेढ़ सोड़हि नार हुनका होइत छनि, ताहिमेसँ भरि साल अपना बड़दकेँ खोजबैत-पियबैत गोटेक सोड़हि कतिकामे बुँचि जाइत छनि से बेचि लैत छथि आ मालगुजारीसँ छट्टी पवैत छथि । आव तँ अहाँ अवश्य बूझि गेल होयबैक जे ओ हमरा दिस मन्दिग्ध दृष्टिँ किएक तँ कतै छलाह । ओहि दिन ओ हमरे टालमेसँ नार धिचने रहथि । ओ साल भरि एहिना सभक टालमेसँ घीचि-घीचि खोजबैत छथि आ जँ बयो देखि लेल-कनि तँ ओकरा टोकबासँ पहिने डाँटि लैत छथिन—तँ कतै छी की अहाँमेसँ नहि विचलहुँ अछि, हमरा भगवान अपने टाल देने छथि । मुदा हम तँ अपने टेढ़ बरखपर गेल छलहुँ तँ हमरा कोन पता जे हमर टाल कोन थिक । अन्यमत्तरकताकेँ हटवैत बगड़िया कका बजलाह—हो भातिज, अपना गाममे तँ टोले-टोल फराके-फराके यज्ञ-जाप, कीर्तन-हवन भेल । एहूमे चढ़ाखड़ी, रीसा-रीसी, फल्लं टोलबला शतचण्डी कयलनि तँ अपना टोलमे सहस्र चण्डी करब । रमपतिया अपना टोलमे अष्टग्रह कीर्तन कयलक तँ चन बेमड़र अपना टोलमे नवाहे ठानि देलक, मुदा एहि बासठिमे कोनो

बगड़िया ककाक अष्टग्रह तँ जेना बितलनि तेना बितलनि, ओकर अनुभव जे जोगाकऽ राखि लेलनि, से लोकक भेंटलापर परसि दैत छथि; मुदा हुनका लेखे जे नवम ग्रह आयल छल, से छल भोटक हूलि-मालि । बयो गाछ-छापबला तँ बयो बड़द-छापबला, बयो साइकिल छापबला तँ बयो दीपछापबला-हुनका लगअबनि आ भोट मडनि । एहि भोटक भित्तमडनीसँ हुनक भोट ततेक दलकलनि जे अष्टग्रहमे पड़ि गेलाह । भोटक जमाना बितलापर तखन जाकऽ साव-काश भेटलनि । तखन आयल फगुआ । मुदा फगुआक लेल ओ रंग-अबीरक ओरिधान नहि कऽ सकलाह । मुदा तँ की फगुआ कोँके जैतनि ?—सं०

ठाम आयुर्वेदिक, कोनो ठाम होमियोपेथी आ कोनो ठाम एलोपेथी कीर्तन-हवन भेल अछि ।

हम पुछलियनि—दवाइ तँ मुनने छनिऐक आयुर्वेदिक, एलोपेथी मुदा पूजा-पाठ कोना . . .

बगड़िया कका हमरा मुँहकगप्प लोकैत कहलनि—बुझलह नहि, पद्धतिक अनुसार शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लाख महादेवक पूजाकेँ हम आयुर्वेदिक बुझैत छिएक आ नवाह, रामार्चा पूजा एहि सभमे दोलो ढक बाजल, नाचो गान भेल आ पुष्ट कऽ परसादो भेटलैक तँ ई होमियोपेथी भेल आ कीर्तन, एकछाहा कीर्तनमे चौबीसो घंटा चिचिआइत रहू, ताहूमे एक बजे रातिसँ तीन बजे राति धरि जनिकालोकनिकेँ पाट पड़लनि तनिकर मुँह ओहने भऽ जाइत छलनि

जेना कोनो मिक्कर पीलाक बाद होइत छैक, से भेल एलोपेथी आ एना टा बात आरो . . .

हम मुस्कुराइत पुछलियनि—से की ?

बगड़िया कका बजलाह—डाक-दरक ओहि ठाम देखावह जाह तँ ओ एक टा मुड, एकटा मिक्कर, एकटा टेबलेट आ एकटा पोडर सभ तरहक दवाइ दऽ देतह । से एहि बेर कीर्तन करैत छल लोक तँ कहैत छलैक—जय रघुनन्दन जय घनश्याम गौरी शंकर जय हनुमान

एकटा देवताक भरोमे रहलापर कदाचित् बामठिमेसँ वा छटि ने जाय तखन तँ मठि जायब । तँ एकरा हम एलोपेथी कीर्तन कहैत छिएक । हमरा मुस्कुराइत देखि फेर कका बाजऽ लगलाह—हो, धन ई बामठि जे देहपर मामु देखैत छह । अपने अनुष्ठानमे हविष्य खाइत छलहुँ आ लत्ता-कपड़ा टाका-पैसा लबैत छलहुँ तँ परिवार चलैत छल, ने तँ अग्रहन तँ एहि बेरक गर्दनिँ काटि लेलकैक, एको शेरक कट्टाक हिसाबसँ होइतैक तँ कहवा लेल अग्रहन होइत । आ ताहिपरसँ देशक बड़का माथ-प्राग बला नेता ठाँहि-पठाँहि लोककेँ मूख कहि देलथिन । हमरा तँ लोक कहैत छल जे अष्टग्रहमे नहि किछु भेलैक तँ सभ पण्डितकेँ पकड़िकऽ भकसी शोकित दैतैक सरकार । भला कहऽ जे लोक दुखित पड़ैत अछि आ डाकदरक ओहि ठाँ जाइत अछि, दवाइ दारू करैत अछि तइयो जँ रोगी मरिए जाय तँ तखने लोक बुझतैक जे डाकदर खूब दवाइ देलथिन ? मुदा राज तँ सरकारक थिकैक तँ हम तँ अपना धरक पाँचो जोड़ धोतीकेँ सोडरमे उसीनिकऽ पीरा रंग झाड़िकऽ रखने छी जँ कदाच तलाशी लैक तखन तँ मोफतमे फाँसी पड़ब ।

हम कहलियनि—एहन कतहुँ होइक कका, करोड़क लोक जे एतेक यज्ञ-जाप कयलक अछि तकरा भकसी

झोंकि देतैक से भकसी झोंक ठट्ठा थिकैक ?

“आहि तो कहैत छह ठट्ठा थिकैक, हौ, आन जे मूर्ख कहने रहैत तें छाउर लगाकऽ सट्ट दऽ जीह खीचि लिहिएक, मुदा एहि कलियुगमे तें नेते लोकनि देवता थिकाह । हमरा लोकनिके तें एकर प्रायश्चित्त करहि पड़ल ।”

हम पुछलियनि—से की बगड़िया कका ?

‘आहि बा. . . .हौ, आठ ग्रह जखन कटल तखन नवम ग्रह आयल ई भोट । भरि दिनमे पचीस गोटे आबय जे हमरा भोट दियऽ तें हमरा भोट दियऽ । ककरा की कहियौक से फुरवे ने करय ; एहि सभमे मकुन्द चरफर छथि । हम पहिने तें यह कहलियेक जे श्री बाबू, एहि बेरूक भोट तें हम मकुन्द-के दऽ देलियनि, आव अगिला बेर जे पहिने कहब तनिके देव । तें ओ हँसिकऽ कहलक जे एहि बेर मकुन्द बाबू नहि ठाढ़ छथि । ओ तें मुखियाक चुनावमे ठाढ़ छलाह ।”

‘हमरा यह बाट सूझल,— बगड़िया कका गप्पके आगां बढौलनि —‘हम कहलियेक बस, बस, मकुन्द बाबू मुखिया छथिहे, ओ जे कहताह से हमरालोकनि करब ।’

हम पुछलियनि—ओ कोन पार्टीक लोक रहय ?

‘हौ, एकटा बड़द पार्टी आयल तें कहलक जे बड़दपर छाप मारिकऽ भोट दियऽ । हम कहलियेक जे हमरा एकेटा बड़द अछि आ ओहपर छाप मारिकऽ हम अहाँ के भोट दऽ देव तें हम अपने बिलैटि जायब । एक तें अपने बेचाराके एहि बेर चारा नहि भेटि रहल छैक, अगहन भेल नहि, नार-पोआर कहाँसे होइत, गाममे परतो-परांत रहल नहि, बांसक बीद क्यो आव छूबहि ने दैत अछि, गुण्डा द्विअक से मीलबला गुण्डा बिनु छौआक खाइते ने अछि ।

‘एक टा गाछबला आयल । ओ कहलक गाछपर छाप मारिकऽ हमरा भोट दियऽ ।

‘ओकरा की कहलियेक बगड़िया कका !’ हम पुछलियनि ।

‘कहलियेक— बाप-पुरखाक

‘एकटा साइकिल बला आयल तें ओ कहलक जे साइकिलपर छाप मारिकऽ हमरा भोट दियऽ । हम कहलियेक—हम अपने तें जिनगीमे साइकिल-पर ने चढ़लहुँ ने रखलहुँ, तखन बीआ कालेजमे पढ़ैत छथि, वियाह नहि

सभके । आरौ लोक आयल रहय ?

ओ बजलाह—‘आरे, सुनह तें पहिने हमर सभ बात । एकटा ओपड़ी बला पहुँचल तें कहलक जे ओपड़ी-पर छाप मारिकऽ भोट दियऽ । हम कहलियेक—ओ बाबू, हमरालोकनि भेलहुँ पुरान लोक । एखनो माथ देखि सकैत छी, कनेक केश पंघ होइत अछि, तें केश कुटकुट काटऽ लगैत अछि, तखन ने तालोकनि बड़ी-बड़ी ओपड़ी बढ़ाकऽ रखने छथि, हुनकालोकनिके कहियौन ।

सभसें आखरीमे पहुँचलाह एकटा दीप बला । हुनका कहलियनि—सभसें सोझ बात लऽ कऽ अहाँ अयलहुँ अछि, एक टा दीप के कहय, स्त्रीगणके कह-बैक तें दस टा दीप बना देत, एक कोइया तेल आ कनेक टा टेमी खर्च करऽ पड़त । थगू, आडनसें नेनहि अबैत छी, लाउ छाप, हम मारिकऽ दइए दैत छी । ओ हँसऽ लगलाह, कह-लनि—सँह कनेक ध्यान रखबैक ।

‘तखन की भेलैक बगड़िया कका ?’—हमरो गप्प रुचिगर लागल ।

बगड़िया कका कहलनि—हौ भातिज, बड़दबला मकुन्दके पकड़िकऽ परचारमे लऽ गेलनि, जखन ओ घूरिकऽ अयलाह तें कहलनि-बगड़िया कका, हम तें बाध महक हेडा भऽ गेलहुँ जे पौलक से उठाकऽ लऽ गेल आ अपन डेप फोड़ि लेलक, ओतहि छोड़ि देलक । की खाइत छी, की पिबैत छी, कोना रहैत छी से पुछारि करऽवला क्यो नहि ।

हम कहलियनि—हौ मकुन्द, जखन बड़देक पालामे पड़ि गेलाह तें घूरि अयलह सँह एक लाख । डेप फोड़क बेरमे तें तोरा घिसियौलकह आ कदवा बेरमे छूटिकऽ पुछबो ने करतह । मुदा हौ भातिज, गामक (शेष पृष्ठ २३ पर)

भविष्यवक्ताक प्रति (कबीर)

अररर ! ज्योतिषविज्ञमानिजन ! मन दऽ सुनथु कबीर आठ ग्रहक रङ्गहि अछि भीजल जनिक शरीर-अबीर

धीर संसवमे आबथु आइ

अपन मुहसँ से बदलथु लाइ

थिक ‘अन्तरक अभाव योग’ ई नहि बुझलनि जे अर्थ बनि पण्डित मानी बंसल छथि तनिक पढ़ब सभ व्यर्थ

अर्थलोलुप टा नहि से होथु

अपन आलसके आबहु धोथु

“एक-सूत्रमे दृश्य योग” थिक छथि कहने सभ बूढ़ से तिनियोटा ग्रहक गणितसें नहि होइत अछि सिद्ध

गिद्धवत देखथु आखि पसारि

शान्तमन कुर्मात दुराग्रह छाड़ि

हम दू वर्ष अपन पतरामे पहिनहि ई लिखि देल नहि कयमपि अनिष्टकर होयत आठ ग्रहक ई मेल

देल नहि क्यो जन तहि दिस ध्यान

भेल छथि बुधियारो अज्ञान

ज्योतिष शास्त्रक दुइ विभेद अछि फलित तथा सिद्धान्त फलित अनिश्चित-फल होइत अछि, निश्चितफल सिद्धान्त

भ्रान्त छथि तहिमे सम्प्रति लोक

कहल हम ई कय बेरि कतोक

थिक ज्योतिष प्रत्यक्ष शास्त्र ई बुझितहुँ सभ विद्वान देखि समक्ष सुभिक्ष समयके कहथि अशुद्ध अज्ञान

आन के तनिका सकत बुझाय

अन्धके के सकताह सुझाय

ई रूपक व्यवहार रहल तें हम कहि बैछो स्पष्ट भऽ जायत शास्त्रक मर्यादा गनले दिनमे नष्ट

भ्रष्ट होयत देशक सभ धर्म

करत सभ क्यो मनमानी कर्म

तें पण्डितसमाजसें सविनय हमर निवेदन एक करी सुधार अनर्गल रीतिक सभ मिलि सहित-विवेक

टेक पूर्वक जहिसँ रहि जाय

रहथि नित सोताराम सहाय

—कविवर श्री सोताराम झा

रोपल किछु गाछ छल जरूर, मुदा से सभ कोशी मर्यादा कृपासें मुखा गेल । आव अपने रने-बने पात खड़रने फिरैत छी, तखन बाड़ीमे एक नव गछुली कटहर अछि से बाबू माफ करू, ओहिपर छाप नहि मारल होयत ।

करोलियनि अछि, हुनका वियाहमे साइकिल देबे करतनि, तखन वरू अहाँ आयब तें ई जे एखन झरपटही साइकिल कीनि देने छियनि ताहिपर छाप मारिकऽ अहाँके भोट दऽ देव ।

हम कहलियनि— बगड़िया कका, अहाँ तें अपूवें उत्तरसभ देलियनि



फागु मनाबी

अजयनाथ थिक हमर नाम, फागु मनाबी हम सब ठाम
जहाँ तहाँ हम धूम मचाबी, यश-अपयशके खूब मचाबी
नारिकेर-किसमिश हम खाइ, मास्टर लग जइते मनुआइ
बाबू हमरा करथि, दुलार, नित्य कनंठी देखि हजार
बूधा नुम कहि-कहि होथि-मायमुदित दुह-हाथ हँसोथि
बाबू थिका द्वारिका नाथ, काकाजी छथि बट्टीनाथ
अवधविहारी सोवर बंस, जटा-जटित कुंचित धन-केस
सोचो मनमे नहि दुख-लस नाम करब होरोमे बंस
शालि-डफ, भौजीक सिनेह, बिसरब नहि, बर बिसरब देह
युम-युग जीबी फागु खेलाइ, रंग-अबीर धोरि नितराइ
श्री शंकर, कलकत्ता



फलां बाबू हमरे नाम
फगुआमे हम जायब गाम
पूआ खायब कचरम-कूट
रंग खेलायब भऽ एकजूट
रंग धोरि छोड़ब फुवकारी
भौजीकेर भिजायब सारी
'हाँ-हाँ' करता क्यो रणबीर
रगड़ब हुनके गाल अबीर

—श्री हरिनाथ झा,
ग्राम-देवराम, पो.-अमंठी, दरभंगा

बुझी अलि

आलि चिड़ैकेर नाइड़ि बिलाइकेर
मुँह मूसकेर पेलउँ अलि
पीठ हरीनकेर पेट सिंहकेर
अजब जानवर आयल अलि
—लुखी

तीन आखरक हमर नाम
प्रथम कटय तँ रस बनि जाय
मध्य कटय तँ सामुर बनय
अन्त कटय तँ सार कहाय

—सारस

सबसे सुन्दर चाम हमर
बाग बगचा धाम हमर
हँसव-खेलव काज हमर
इ आखरकेर नाम हमर

—फूल

हिसू दुब्वर कारी बड़द
बस शीशाक जहलमे
चमकर बारह मील लगावय
मुदा जहलसे भागि न पावय

—धड़ीक मुड़

देखवामे पानिसन
भीजय नै कोनो चीज
पकड़ऽ जाइ तँ छटऽ भागय
बूझ तँ ओ कोन चीज
—पारा

—श्री परमानन्द ठाकुर, अकौर,
दरभंगा ।

— ० —

बगड़िया ककाक फगुआ

(पृष्ठ १० क शेपांश)

इसकूलपर ततेक मलटरी पहुँचल,
ततेक हाकिम सब जूटल जे मोनक
सोचलाहा मोनेमे रहि गेल, डरे
बड़दे पर छाप मारिकऽ भोट दऽ देलि-
एक । लोक कहय जे बड़देके छाप नहि
मारबैक तँ अनुष्ठानमे जे गेल छलि-
एक ताही अपराधमे पकड़िकऽ जहलमे
दऽ देत ते बड़देके की भोट देलहुँ,
बूझ जे प्रायश्चित्ते कयलहुँ ।

हम पुछलियनि—फगुआक की
कोना गाममे उडव-बाधव अछि से
कहू बगड़िया कका ?

कहलनि—हौ भातिज, नवग्रहक
मारल लोक की फगुआ मनाओत ?
हम तँ सोचने छी जे रंगक बदलामे
दखिनवरिया घरक चारपर जे
पोरे सागक लत्ती अछि तकर पाकल
फड़ एक मौनी तोड़ि लेब, जकरे मुँह-
पर रगड़ि देबैक तकरे मुँह लाले-
लाल, आ अबीरक तँ सुन्दर जोगाड़
धरा कऽ राखि लेलहुँ अछि ।

'से की बगड़िया कका ?'

'मुनलहुँ जे भोटमे बड़कानेता
भाखन करऽ आबि रहल छथि ते
पछवरिया टुटलाहा पूल बनावऽ लेल
ईटा मुखी खसलैक, मुदा ओ नहि
आबि सकलाह, तखन तँ सब मुखी
पड़ले रहलैक । हम ओहीमेसे एक छिड़टा
उठा अनलहुँ अछि आ कपड़छानकऽ
खनने छी, जे औताह तनिका मुँहमे
हँसोबने जयबनि ।

हमरो एक्काबला अगुताइत छल
तेँ गाम दिसकऽ चलि देलहुँ । ०००



सुधिक हिलकोर

तनिक सुधिक हिलकोर, उठय नित मानस-सरमे जोर
 स्वर्गहुँसैं बढि सुखमय बीतल सौंसैं शैशव-काल
 हृदय लगाय सतत जे ररवलनि बुझितहुँ जग जंजाल
 जे सिंहासन हरलक निष्ठुर अबिते वयस किशोर
 हमर मनक आशा-आकांक्षा जनिकर मनक हुलास
 हमरे सुखमे देखि मेलाइछ जनिकर मनक पियास
 कतहु जाइ हम, चित्त जनिक नहि छाड्य हमर पछाड
 हरियर-कचन बनल रहय नित जनिकर हृदयक चास
 कम्पितकऽदै' छल अन्तरकैं हमर रुक निःश्वास
 साओन-भादष बनल नयनमे उमडि उठय छन घोर
 भाव-भूमिपर रुक वृक्ष हम प्रिय सुरतरुक समान
 हमरेपर लटकल रहइत छल निरवधि आकुल प्राण
 जनम अवधि नहि नयन अधायल अनुरवन भावकिभोर
 जनिक कामना-कालिन्दीमे रुक हमहिं जलजात
 जीवन उदयाचलक शिखरपर मधुमय अरुणिम प्रात
 हमर यशोदा, हमर खुरलुझी तनिके मारबन-घोर
 कातरता-आतुरता बढबय करय मनक बुरव दुन
 भाव अछैत अभाव ककर ई कयलक जीवन सून
 जनिक अर्चना हेतु अर्घ्य-जल ढारय लोचन नोर
 गंगा ओ गायत्री सब जे चरण, हमर आराध्य
 जनिकर वत्सलता-दशहरिमे कऽ न सकल बुरव बाध्य
 तनिके वन्दनमे रत रहु मन भिनसर-सन्ध्या-भोर

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'



कन्तू भाइक कुसियार

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

भऽ सकत छैक कुजड़नीसँ तरकारीक लेन-दोन काल सेहो गोटेक खुइचा उड़ि गेल होइक, मुदा सभ लोक एहिपर विश्वास करक हेतु प्रस्तुत नहि भेल, जखन गौआरे भोज भेलैक तँ एक भागसँ प्रस्ताव अयलैक जे फल्लां बाबूक आङनमे पेयाजुक खच छनि तँ समस्त गौआक पंक्तिमे नोंत दऽक हुनका यदि नहि बँसल देखिन तखने नोंत मानल जाइनि । किछु गोटे एहि गोलमे, किछु गोटे ओहि गोलमे आ अन्तमे तेहन पँध गोलैसी भेलैक जे बीस हजार मोकदमाय स्वाहा भऽ गेलैक ।

अस्तु, ओही थथाथही लोकमेसँ एक गोटाकेँ कातेमे बजाकऽ पुछलैक जे ई हुमेला कथीक थिकैक ? ओ कहलक—आहि वा...आइ कन्तू भाइ ननकिरवा क्योटेकेँ बिनु अपराधेँ मारलथिन अछि तकरे पंचंती करबावऽ लेल ओ सभकेँ बजौलकैक अछि ।

हमरो उत्सुकता भेल जे कन्तू भाइ सन हँसमुख, विनोदी, सहनशील ओ मिलनसार लोक मारि बँसलथिन तँ अवश्ये ननकिरवा कोनो तेहन अपराध कयने होयतनि । कन्तू भाइ तँ अपने झगड़ाक भीड़ गेनिहार लोक नहि छथि । चटपट गामपर गेलहुँ आ फूसि कथी लेल कहूँ, साँझखन कऽ एक सुपारी भरि कऽ महादेव बाबाक बूटी दऽ दँत छिएक तँ भरि दिनक ठेहीकेँ ओ सोझे बन्दूकक गोलीक काज करैत छनि । जोड़ा बच्छाकेँ पहिने ड्योड़ीक टाट लग निहुँछल गेलैक तखन ओकरा खुट्टापर बान्हि एक पथिया घास आगाँ कऽ देलैक आ कंटीरोक भानस आइ अपने आङनमे होइनि, कारण भरि बाट हुनक आँखि ओही रोहपर लागल छलनि तँ हुनका

लहुँ । नजरि खिड़ौलहुँ जे कतहु कन्तू भाइ देखि पड़थि, से कतहु देखि नहि पड़लाह ।

वातावरण एकदम शान्त-गंभीर; जेना, बिहाड़िक अयवामँ पूर्व रहैत अछि । एहि गम्भीरताकेँ देखि आगे आशंका होअऽ लागल जे हो न हो, कोनो पँध घटना भेलैक अछि ।

एक भागमे टोलक किछु राइ-रोहियाकेँ गोठ बनाकऽ बँसल देख-लियेक । बड़द हट्टाक बड़दक दाम आ शुद्धक माथे वरसभक दामक चर्चा गप्पक विषय बनल छल । फल्लां भाइक सरबेटाकेँ उतरवारि गामबला एतेक हजार दँत छनि तँ चिल्लां भाइक सड़बेटाकेँ पछवारि गामबला एतेक गछिकऽ पाछाँ एना आँठा देखा देल-कनि । कहवाक आशय ई जे ने कतहु कन्तू भाइक पता ने कतहु हुनका झगड़ाक खोरचाल । भेल जे बूझि पड़ैत अछि भोलवा हमरा ठकि लेलक । कन्तू भाइपर कतहु पंचंती होइनि ? ओ आइ भरि एहन काज करबे ने कयलनि अछि तखन आइ किएक करताह ?

तावत पुजेगरी जी कहलथिन— तँ तावत भगवानक आरतीक बेर उनहल जाइत छनि से किएक ने सम्पन्न कऽ ली । सभ कहलनि— बेस, बेस; कि चुल्हवा आविकऽ फौदार झा सरपंचकेँ कहलकनि जे कन्तू बाबू कहलनि—चल, चल, हमरा ठकऽ अयलें हेँ ? हम अपन बेरपर भगवानक मन्दिरपर जाइते छी से जयबे करब ।

मन्दिरपर आरती शुरू भेलैक, घड़ी-घंटाक शब्द सुनैत देरी कन्तू भाइ ससरलाह मन्दिर दिस । आरती भेल, स्तुति पाठ भेल, चरणोदक बाँटल गेल । आन दिन सभ लोक अपन-अपन बाट धरैत छल आ आइ फेर-सभ बैसि गेल तँ कन्तू भाइ कहलथिन—आइ किछु प्रसादो



चौरस पीठपर सटका केहन सटीक बँसतैक !

जोगाड़ छैक जे सभ फेर आसन जमबैत छिएक ?

फौदार झा कहलथिन—अहाँके तखनसँ समाद दैत छलहुँ तँ किएक ने अबैत छलहुँ ?

कन्तू भाइ—हँस औ सरपंच, चुल्हा गेल छल कहऽ जे सरपंच बजबैत छथि, अहाँपर पंचैती होयत । हम दबाड़लहुँ छोड़ाकेँ जे ठकऽ लेल एक हमहीं भेटैत छियनि । कहूँ तँ, हमरापर पंचैती कथीक होयत ?

फौदार झा—ननकिरबा क्योट अहाँपर नालिसी कयलक अछि । साँझसँ अहींक बाट तकैत हम सभ बैसल छी आ अहाँ अबिते ने छलि-एक ।

कन्तू भाइ हँसैत कहलथिन—ननकिरबाक नानीक सगाइ करा दैत छिएक । ओ हमरापर पंचैती बैसा-ओत से की ओकरा बरियातीमे नहि लऽ जयबैक ?

फौदार झा ननकिरबाकेँ पुछल-थिन—बाज रौ ननकिरबा ! तोरा कन्तू भाइक विरुद्ध की कहवाक छीक ?

ननकिरबा—सरकार ! आइ हम धरमबान्हक नीचाँमे जाफरी बनावक लेल बाँस फाड़ैत छलहुँ आ कन्तू काका बान्ह धयने चल अबैत छलाह । धयले सटका हमरा पीठपर मारलनि । से सरकार सभ पुछियनु जे हम हिनकर कोन अपराध कयने छलियनि ?

कन्तू भाइ सन्न रहि गेलाह । फौदार झा पुछलथिन—ननकिरबा अहाँक कोन अपराध कयने छल ?

—‘कहूँ ई एहन सद अछि, ककरो अपराध नहि करैत छैक, तखन हमर अपराध किएक करत ।’ कन्तू भाइ उत्तर देलथिन ।

फौदार झा ननकिरबासँ पुछल-थिन—तोरा कन्तू भाइ कोन ठाम मारलथुन ?

ननकिरबा पीठ उघाड़िकऽ सभकेँ देखा देलकनि । ओकर पीठ दू दालि भऽकऽ फुटल छलैक । कन्तू भाइ अपनहुँ आँखि निडारिकऽ देखलथिन तँ आश्चर्यचकित भऽ गेलाह ।

ओ हाथ जोड़िकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह आ कहऽ लगलथिन—औ पंचलोकनि, जखन एकर पीठ देखलियेक अछि,

आकाशक स्वर

पृथ्वी धरि ई रहय मनुज,
पृथ्वीमे एहि निराधारकेर आश्रय अछि !
पृथ्वीमे लय, पृथ्वीमे क्षय
संसृतिक एहिमे अछि सभटा आश्रय विस्मय
आ अणुसँ लऽ परमाणु विन्दु धरि
देखि सकय ई अविगत गति संसृति जीवन
तँ श्रेयस्कर ओ शुभ, सुन्दर !
ई स्वयं भ्रमित भऽ ताकि रहल
जनु इतर जगतकेर अवलम्बन
आ स्वयं अरे एहि निराधारमे भटक रहल
निश्चय ने जतऽ अछि कोनो पथ
कोनो ने दिशा, कोनो ने लोक
पृथ्वीकेर अछि बस दिशा एक, पथ-छोर एक.....
बाकी सभ किछु, किछु नहि....
नोरव, आलोक, शून्य, भ्रम पथ, अनन्त...
पृथ्वी धरि ई रहय मनुज
पृथ्वीमे एहि निराधारकेर आश्रय अछि
पृथ्वीकेर लघुतामे गरिमा
पृथ्वी तरकेर संहार सृजन, पट-परिवर्तन
अक्षर अव्यय जकरापर करइछ परिभ्रमण
ई निखिल सृष्टिकेर आवर्तन
एकरा कण-कणमे गुथल-छिपल
एहि स्थूल जगत आ अन्तरिक्षकेर भासमान
अज्ञात-ज्ञात सभ अर्थ-तत्त्व
पृथ्वी के सभटा शंका ओ समाधान
ई स्वयं रचय कण-कण ‘उलझन’
आ देख तकर अणु-अणु उत्तर
ई अभिनयकेर अछि रंग भूमि
सभ अन्य विश्व एकरा पाछाँकेर चित्रित पट
से छोड़ि मृत्तिकाकेँ नभमे
के करइछ निष्फल आरोपण
अपना मनकेर, अपना तनकेर
प्रतिभा-विवेककेर दंभपूर्ण ई संचारण !
नहि बुद्धि बढ़त बढ़इत अछि केवल अहंकार
करइत-करइत नव सृजन स्यात्
होइछ एहिसँ प्रलयानि ज्वलन
नहि बूझय मानव पृथ्वीकेर
अछि प्रगति रेख निःशेषप्राय
ई ज्ञान ओकर अछि बनल स्वयं नूतन ‘उलझन’
खोजैत प्रगतिकेर नव मोड़
एहि ‘शेष प्रश्न’केँ छोड़ि अनवगत जकाँ जेना
किछु दूर दृष्टिबश निकट अंध
बनि कऽ कि जेना नहि रचय ज्ञानकेर बृहज्जाल
ताकत की ओ नव तत्त्व, जखन
सभ तत्त्वक जननी पृथ्वी ई छथि ठाढ़ स्वयं
नव देवऽ हेतु आधार-शिला
पृथ्वी धरि ई रहय मनुज,
पृथ्वीमे एहि निराधारकेर आश्रय अछि !

—श्री जगदीश प्रसाद कर्ण

तखनसँ हम अपने अपनाकेँ महा अपराधी मानि रहल छी । मुदा अमल जे बात छलैक से आव अहाँलोकनिक सोझाँ सत्य बात हम कहैत छी । आव अहाँलोकनि जे दण्ड देव से हम शिरो-धार्य करव ।

सभ उत्सुकतापूर्वक हुनका दिस ताकऽ लगलनि । कन्तू भाइ कहऽ लगलथिन—असल बात भेलैक जे हम आइ रीआहीसँ धीया-पूता लेल चारि टोनी कुसियार लेने चल अबैत छलहुँ आ ननकिरबा धरमबान्हक नीचाँमे बाँस फाड़ैत छल । एकर पीठ छलैक एकदम धोबियाक पाट जकाँ चौरस, से देखि हमरा भेल जे एहन चौरस पीठपर सटका केहन सटीक बैसतैक । काँखतऽर कुसियार छल । भगवान सोझाँमे छथि जे फूसि कहैत होइ । हमरा भेल जे कुसियार तँ मधुर होइत छैक, एहिसँ चोट नहिँ लगतैक, कोन क्षति जे सटका सटीक बैसतैक की नहि से जाँचि लेल जाय । गुरुक सप्पत खाकऽ कहैत छी, जँ ई बूझि पड़ैत जे कुसियार सन मधुर वस्तुसँ चोटो लागि सकैत छैक तँ एहन काज हम किएक करितहुँ ?

मुदा आव हमरा एहिमे सन्देह नहि रहि गेल जे कुसियारोसँ चोट लगैत छैक, से यदि नहि तँ भला बेचाराक पीठ एना कोना फूटि जइ-तैक । आव एहि अपराधमे ननकिरबा जे जड़ीमाना करय, जे कहय से हम तैयार छी । एतबा कहैत-कहैत कन्तू भाइ ततेक भाव-विह्वल भऽ गेलाह जे लोककेँ बूझि पड़लैक आव हिनका आँखिसँ नोर खसि पड़तनि ।

बहुत लोक तँ हमरे जकाँ एही उत्सुकतासँ आयल छल जे कन्तू भाइपर आइ पंचैती बैसलनि, ई एक अद्भुत घटना हमरा गामक इतिहासमे भेल । कन्तू भाइक ई सफाई सुनि जतेक लोक रहय सभकेँ हँसी लागि गेलैक । हुनक एहि सुधपनापर ननकिरबाक मुँहपर मुसकी आवि गेलैक । फौदार झा ननकिरबा दिस तकलथिन तँ ओ मुसकुराइत कहलकनि जे कन्तू काका एहि अपराधक जड़ीमानाकेँ काल्हि साँझखन कुसियारक रस एक-एक गिलासकऽ सभकेँ पियबथुन ।

काल्हि सबेर-सकाल गोली दऽ सभकेँ मन्दिरपर चलक चाही । एहि नियंक संग पंचैती उठि गेल ।

विदेशी शासन यंत्रके सुचारु रूपे संचालित रखवाक हेतु जाहि शिक्षा-पद्धतिके अपनाओल गेल छल ओ विदेशी शासक वर्ग द्वारा । विदेशी शासकके प्रयोजन छलैक किरानीक तथा शिक्षकक । तेहने योग्यतापन्न नागरिकक सृष्टि कयल जाइत छल । किछु वर्ग-विशेषक लोक अपना धोया-पूताके शिक्षित बनबैत छलाह आ ओहि शिक्षा-प्राप्तिक एक मात्र उद्देश्य छल नोकरी करब । उच्च-उच्च पद सभपर भारतीय नागरिकक नियुक्ति होइते ने छलनि । जन-सामान्य ज्ञानक हेतु अथवा शिष्ट नागरिक बनबाक हेतु शिक्षा प्राप्त करब आवश्यक बुझिते ने छल । जनिका एकर जिज्ञासा होइत छलनि से संस्कृत पढ़ैत छलाह, विदेशी भाषा पढ़लासँ ज्ञानक अर्जन भऽ सकैत छैक एहन संस्कार लोकक छलैके नहि । संस्कृत पढ़निहार लोक अर्थक

पाठ्य विषयक विविधीकरण कोन वस्तु थिक, एहिसँ कोन उद्देश्यक सिद्धि होइछ एहि विषयक उत्तर प्रस्तुत निबंधमे द्रष्टव्य ।

हेतु नहि, प्रतिष्ठाक हेतु शिक्षा प्राप्त करैत छलाह । शासन यंत्रके संस्कृतमें कोनो प्रयोजन छलैके नहि । क्रमशः प्रतिष्ठाक मापदण्ड अर्थ बनि गेल आ संस्कृत अर्थकरी विद्या रहि नहि गेलैक तेँ दिनानुदिन संस्कृतक ह्रास होमऽ लगलैक, विदेशी शिक्षा जोर पकड़ैत गेल । संस्कृत पढ़लासँ जे सन्तोष एवं विवेक लोकमें अबैत छलैक तकरो ह्रास संगहि होमऽ लगलैक, नैतिक ओ चारित्रिक बल जे समाजसँ घटऽ लागल तकर प्रति-फल देखले जा रहल अछि ।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद ई अनु-भव कयल जाय लागल जे देशमें जे एखन विदेशी शिक्षा पद्धति चलि रहल अछि एहिसँ देशक शिक्षित युवकके स्वावलम्बी बनयबामे कोनो प्रकारक साहाय्य नहि भेटि रहल अछि । अशिक्षित बेकार लोकक संख्यासँ शिक्षित

पाठ्यविषयक विविधीकरण

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

बेकार लोकक संख्या बढ़ि रहल अछि ।

स्वतंत्रता-प्राप्ति यदि कठिन काज छल तँ ताहसँ कठिन काज अछि कतेक शताब्दीसँ दलित-पतित दरिद्र देशक नव निर्माण करब, सभमे स्वदेशक प्रति कर्तव्य बोध करायब ओ देशक नवयुवक मण्डलक प्रतिभा, शक्ति तथा समयक सदुपयोग करब ।

दोसर बात ई जे जखन वयस्क-मताधिकारक आधारपर देशमें जन-तान्त्रिक सरकारक स्थापना भऽ चुकल अछि तँ सरकारक उत्तरदायित्व भऽ जाइत छैक जे प्रत्येक नागरिकके ततबा शिक्षा अवश्य प्राप्त भऽ जाइनि जाहिसँ अपन मताधिकारक उपयोग

लाह आ एतेक नैतिक पतन समाजक भेल जे शिक्षक समुदाय सन पवित्र व्यवसायी लोक अर्थक लोभमे पड़ि प्रश्न पर्यन्त बेचऽ लागि गेलाह, अंक तँ सहजहि बिकाइये लागल । एहि सभसँ शिक्षामे जे विषमता बढ़ल गेल अछि एहिसँ राष्ट्रक कतेक पैघ अहित भऽ रहल अछि से राष्ट्रहित-चिन्तनमे लागल व्यक्ति अनुभव कऽ सकैत छथि ।

डिग्रीक एहि मान्यताक कारणे येन केन प्रकारेण विश्वविद्यालयीय डिग्री पाप्तिक हेतु जे देशमें हल मचल अछि आ जाहि प्रकारक मेला महा-विद्यालयसभक दुआरिपर लागल रहैत अछि से देखि राष्ट्रक भाग्य-

एहि नवीन शिक्षा योजनामे उच्च माध्यमिक विद्यालय सभके उच्चतर माध्यमिक तथा बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयमें क्रमशः परिवर्तित करवाक दिशामे सरकार डेग उठा चुकल अछि । सरकार ईहो निश्चय छैक जे प्राथमिक शिक्षाके अनिवार्य मानल जाय । एहि हेतु तृतीय पंचवर्षीय योजना धरि ६ सँ १४ वर्ष धरिक शत-प्रतिशत नैनाके शिक्षण संस्थामे भरती करवाक निश्चय कयल गेल अछि, किन्तु सरकारक अनेक कठिनता एहि उद्देश्यक पूर्तिमे बाधक भऽ रहल अछि, तथापि तृतीय पंचवर्षीय योजनाक अन्त धरि ६ सँ ११ वर्षधरिक ७२ प्रतिशत नैना शिक्षा पावऽ लगताह से घोषणा केन्द्रीय शिक्षा मंत्री कयलनि अछि ।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षाके पूर्ण शिक्षा मानि सरकार चाहि रहल अछि जे सरकारी सेवामे अयवाक इच्छा रखनिहारके लोक सेवा आयोगक परीक्षामे बँसबाक अधिकार उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण कयला पर दऽ देल जाइनि । उच्चतर माध्यमिक शिक्षा योजना एहि प्रकारक हो जाहिसँ एतबा शिक्षा प्राप्त कयला उत्तर कोनो युवक कर्म क्षेत्रमे उतरि सकथि आ अपन आजीविकाक प्रश्नक समाधान करैत सामाजिक मर्यादा ओ प्रतिष्ठाक रक्षा कऽ सकथि ।

अतः पाठ्य विषयक विविधीकरणक संबंधमें सरकार गंभीरतासँ विचार कऽ रहल अछि । एहिसँ ई भऽ सकत जे जाहि बालकक जे नैसर्गिक अभिरुचि रहतनि तनिका ताही विषयक शिक्षा दऽ विदेषज्ञ बनबाक सुविधा प्राप्त भऽ सकतनि । एखन जे देखादेखी बहुतो युवक दिग्भ्रान्त भेल-रुचिक प्रतिकूल विषय लऽ केवल डिग्रीक फेरमे घूमल फिरैत छथि-

बूझि-समझिकऽ करथि, जाहिसँ स्वस्थ सरकारक स्थापना भऽ सकय । एहिसँ अतिरिक्त नव-निर्माणमे जाहि प्रकारक लोकक प्रयोजन अछि तेहन लोक अपना देशमें भेटि जाथि, जाहिसँ विदेशी लुरिगर लोकक मुखापेक्षी समाज नहि रहि जाय ।

सम्प्रति योग्यताक ओ मूल्य नहि रहि गेल अछि जे मूल्य कोनो डिग्रीक आंकल जाइछ । कोनो उच्च पदपर वा सामान्योपदपर नियुक्तिक समयमे डिग्रीक जतेक ध्यान राखल जा रहल अछि ततेक वैयक्तिक योग्यता वा कार्यक्षमताके नहि आ डिग्रीक भूल्यांकन होइत अछि अंकमें । जे जतेक अधिक अंक प्राप्त कऽ सकलाह से ततेक अधिक योग्य लोक बूझल जाइत छथि । एकर परिणामस्वरूप अधिक अंक प्राप्तिक हेतु शिक्षितो अभिभावक परीक्षकक दुआरि खटखटावऽ लग-

विधातालोकनि छगुनतामे पड़ल छथि । एमहर बेकारक समस्याक समाधानक हेतु पंचवर्षीय योजनापरसँ पंचवर्षीय योजना बनि रहल अछि, किन्तु बेकारी 'जस जस सुरसा बदन बढ़ावा, तासु डिगुन कवि रूप दिखावा' केँ सार्थक कऽ रहल अछि । एक भाग शिक्षित बेकारक ई अर्धाहिणी सेना समाजक हेतु भारस्वरूप बनल अछि आ दोसर दिस उपयुक्त लोकक अभाव देखल जाय रहल अछि ।

एही सभ बातके ध्यानमे राखि शिक्षा योजनामे परिष्कार भऽ रहल अछि । यद्यपि युवकके स्वावलम्बी बनयबाक हेतु आधार शिक्षा (बुनियादी तालीम)क व्यवस्था कयल गेल, किन्तु एक भाग नेतरहाट, सेंट जीवियर्स आदि प्रकारक शिक्षण व्यवस्था दोसर दिस आधार शिक्षाके निष्प्रभाव बनौने जा रहल अछि ।

ताहिसँ देशक शक्ति ओ समय केवल नष्टे टा होइत अछि । जहिना साधन-हीन व्यक्ति माध्यमिक परीक्षोत्तीर्ण भऽ अपनाकेँ जीवनक चौबटोपर पवैत छथि जाहि ठामसँ अगिला बाटक ज्ञान हुनका नहि रहैत छनि तहिना विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्तिक बाद ओ ओही चौबटोपर अपनाकेँ पवैत छथि । ओहू ठाम हुनका शिक्षा प्राप्तिक उद्देश्य नोकरी छाड़ि दोसर नहि रहैत छनि ।

जखन विविधोकरण होयत तखन रुचिक अनकूल शिक्षा भेटलाक कारणेँ एहि प्रकारक बेकारीक समस्या देशक सोझाँ नहि रहि जायत—ई कल्पना कयल जा रहल अछि । आइ देशमे तकनीकी शिक्षाक अभाव अछि । आइ देशकेँ वैज्ञानिक प्रयोजन छैक, इंजीनियरक प्रयोजन छैक आदि आदि अनेक प्रकारक लुरिगर लोकक प्रयोजन छैक जाहिसँ वैज्ञानिक क्षेत्रमे, औद्योगिक क्षेत्रमे देशक समुचित विकास भऽ सकैक ।

किन्तु विविधोकरण जे पाठ्य विषयक कयल जा रहल अछि तकर कार्यान्वयनसँ पहिने किछु प्रश्न उठैत अछि । पहिल प्रश्न ई जे कोन बालकक नैसर्गिक अभिरुचि की छैक—के प्राविधिक शिक्षा पयबाक योग्य अछि आ के वैज्ञानिक, ककरामे कलाक प्रति अभिरुचि छैक ओ ककरामे कृषि ओ वाणिज्यक,—एकर निर्णायक के भऽ सकैत छथि । एहि ठाम एहि विषयपर ध्यान राखब आवश्यक जे अभिरुचि ओ आकांक्षा भिन्न-भिन्न वस्तु थिक । पहिने शिक्षाक उद्देश्य छल बौद्धिक, चारित्रिक, नैतिक ओ मानसिक विकास द्वारा ज्ञानार्जन करब तथा अपवर्ग चतुष्टय छल-अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष, किन्तु सम्प्रति आजुक अर्थ प्रधान युगमे अर्थोपार्जन द्वारा भौतिक सुखक उपलब्धि मात्र शिक्षाक उद्देश्य रहि गेल अछि । तेहना स्थितिमे

जाहि प्रकारक शिक्षा प्राप्त कयला उत्तर विशेष भौतिक सुखक उपलब्धि संभावित छैक तकर आकांक्षा सभसँ पहिने उत्पन्न भऽ सकैत छैक । यश प्रतिष्ठा, ख्याति अथवा सम्मान, प्रभुत्व अथवा अधिकार आदिक आकांक्षा कोमल मति बालकमे कहाँसँ उत्पन्न होयतनि ? प्राचीन-कालक गुरुकुल जकाँ आजुक शिक्षण संस्थाक व्यवस्था नहि अछि, ने आव सें संभवे अछि, जाहि ठाम राजासँ रंक धरिक बालक एक रंगक रहन-सहन ओ एक प्रकारक वातावरणमे शिक्षा पवैत छलाह । आइ तँ एक बोनिहारक बालक वासिं खेसाड़ीक रोटी खाय मल सन एकटा कपड़ा पहिरि वर्गमे अबैत छथि तँ एक मध्यम वर्गक परिवारक बालक ओकरासँ नोक स्थितिमे, एक डाक्टर, वकील, सेठ साहुकारक नेना आरो नोक-निकुत खाय उत्तम कोटिक परिधानसँ सुसज्जित नोकर द्वारा, ड्राइवर द्वारा वर्गमे पहुँचाओल जाइत छथि । तीनूक पारिवारिक ओ सामाजिक स्थिति भिन्न-भिन्न छनि जकर अनुकूल प्रभाव हुनक वैयक्तिक रुचिपर पड़ैत छनि आ शिक्षा प्राप्तिक समय जखन ओ तीनू वर्गक बालक एक वर्गमे एक ठाम बैसैत छथि तँ ई स्वभाव सिद्ध बात अछि जे एक बालकक हृदयमे अहं भावना तँ दोसर वर्गक बालकमे हीन भावना जन्म लेवे करतनि । जकरा हृदयमे हीन भावना जन्म लेतैक तकरा ओहि भौतिक साधन प्राप्तिक सेहन्ता होयवे करतैक, तखन ओकर नैसर्गिक अभिरुचिपर आघात पड़वे करतैक । ई भौतिक सुखक आकांक्षा बालकक जन्मजात प्रतिभाकेँ कुण्ठित कऽ दऽ सकैत छैक, मारि दऽ सकैत छैक । अतः पहिल आवश्यकता एहि बातक अछि जे तदनुकूल सामाजिक वातावरणक सृष्टि कयल जाय जाहिसँ ओकर मौलिक प्रतिभा सुरक्षित रहि सकैक । से सरकारी यंत्रक इशारा पर

स्वागत

अतिथि, आयल छी

स्वागत ।

निमंत्रणक बेरा थिक

पूजाकेर विधि-विधान प्रसाद प्रस्तुत अछि

ई अनमनस्क गृहपतिक

आतिथ्य नहि थिक

जीवनकेर दुःख आ अवसाद बिसरू

अतिथि, आयल छी

आतिथ्य ग्रहण करू ।

ग्रहणमे ग्रह आ नक्षत्र बिछुड़ल छथि

एहि हेतु भकोभंग गाछ-बिरिछ लगैत अछि

मुदा,

ओ आत्मीय,

त्यागक बेरा चल गेल

स्वागत !

आतिथ्य ग्रहण करू

ई बेरा निमंत्रणक आयल अछि

ग्रहण करू, ग्रहण करू

आतिथ्य ग्रहण करू

अतिथि, आयल छी ।

स्वागत ।

प्रोफेसर श्री बेचन एम० ए०

नहि, अपितु समाजक सहयोगेसँ संभावित अछि आ एक अवधि निश्चित कऽ ई नहि कयल जा सकैछ, अपितु एहि हेतु काल अपेक्षित अछि । धैर्य-पूर्वक नवीन योजनाकेँ कार्यान्वित कयल जाय तकर अपेक्षा अछि । दोसर बात ई जे छात्रक अभिरुचिसँ बेसी तँ सम्प्रति अभिभावकक अभिरुचि एखन देखल जा रहल छनि । एक डाक्टर अथवा इंजीनियरकेँ जतेक भौतिक सुखक साधन उपलब्ध छनि ततेक कृषि, वाणिज्य वा कलामे निष्णात व्यक्तिकेँ नहि । तँ कोनो अभिभावक पहिने ई किएक चाहताह जे हमर बालक विज्ञान वा प्राविधिक शिक्षा छोड़ि कृषि वाणिज्यक शिक्षा प्राप्त करय ? यदि हुनका नेनामे चित्रकारिताक जन्मजात प्रवृत्ति छनि तँ की ओ ओही दिशामे अग्रसर

होमऽ देधिन ? कथमपि नहि, आइ मेडिकल अथवा इंजीनियरिंग आदि विभागमे पढ़निहार छात्रक मूल्य पाँच, सात, दस हजार आँकल जाइत छनि आ एक चित्रकारीमे लागल छात्रक मूल्य मड.नीओमे महग । कृषिमे मौलिक प्रवृत्ति रखनिहार लोकक घरमे लोक मड.नीओमे कन्या देव स्वीकार नहि करैत अछि आ पूर्वोक्त प्रकारक छात्रक हेतु ओ सम्पत्ति पर्यन्त बेचिवेचि हजारक हजार खर्च करैत अछि । तखन कोनो अभिभावक अपना नेनाक मौलिक कृषि प्रवृत्तिक विकासमे साधक कोना होयताह ? अतः ने छात्र स्वयं निर्णायक भऽ सकैत छथि, ने हुनक अभिभावक । तखन एकर निर्णय के करत जे कोन बालकक मौलिक रुचि कोमहर छैक ?

किछु लोकक मत छनि जे ई

उत्तरदायित्व शिक्षकलोकनिके बहन करक चाहियनि, किन्तु एहि प्रकारक विचार रखनिहार व्यक्तिके वर्तमान व्यवस्थापर ध्यान राखक चाहियनि। एखन एक वर्गमे ६० छात्र बैसैत छथि तथा एक घंटा ४० मिनटक होइछ जाहिमे १० मिनट वर्गमे जाइत प्रश्नोत्तर आदिमे समाप्त भऽ जाइछ, तखन एक छात्रपर एक घंटेमे आध मिनट पड़लनि। सप्ताहमे एक विषयक ४ घंटा मात्र होइछ तँ एहि प्रकारे एक छात्रपर सप्ताहमे दू मिनट, मासमे ८ मिनट आ मिलाजुलाकऽ सात साढ़े मास भरि वर्षमे विद्यालय सभ चलैछ तँ सभ जोड़ि एक छात्र पर एक घंटासँ बेसी समय कथमपि एक शिक्षकके नहि प्राप्त होइत छनि। विभिन्न पारिवारिक ओ सामाजिक स्थितिमे पालल बच्चाक प्रवृत्ति वा मौलिक रुचिक परिचय की एक घंटेमे बूझब संभव अछि? अतः एखनक व्यवस्थामे एक शिक्षको एकर निर्णायक नहि भऽ सकैत छथि।

तखन एहि प्रकारक विशेष मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त कयला उत्तर जँ ई संभव हो तँ तकर प्रचुर व्यवस्था पहिने भऽ जाय जाहिसँ प्रत्येक शिक्षण संस्थाके कमसँ कम एक एहन मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक उपलब्ध भऽ जाथिन अथवा एक शिक्षकके ओतबे विद्यार्थीक दायित्व सोपल जाइनि जाहिसँ ओ निष्पक्ष निर्णय करबाक स्थितिमे आबि सकथि। ताहूमे ई सतर्कता अपेक्षित अछि जे जेना एखन अर्थक लोभमे अंक बिकाइत अछि आ अंकक प्राप्ति हेतु अभिभावकलोकनि स्वग-पाताल एक करैत रहैत छथि तहिना जँ मनोवैज्ञानिक शिक्षक लग आरम्भ भेल तँ एक शिक्षक जकरा कलाक हेतु उपयुक्त बुझथिन, दोसर शिक्षक विज्ञानक हेतु आ फलतः जाहि उद्देश्यसँ विविधीकरण कार्यान्वित कयल जा

रहल अछि, ताहि उद्देश्यक मूले पर कुठाराघात भऽ जायत।

दोसर प्रश्न ई हो उठैत अछि जे विविधीकरणक हेतु वर्ग उपयुक्त मानल जायत वा वयस? यदि वर्गके उपयुक्त मानल गेल तँ वर्ग टपयबाक प्रवृत्ति जेना एखन समाजमे अछि से दोष पुनः आक्रमण करत आ मनोवैज्ञानिक शिक्षाविदलोकनिक मत छनि जे एहि हेतु तेरह चौदह वयसे उपयुक्त अछि। १४ वर्ष धरिक बालकके अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा देबाक योजना सरकारक छँके, ओहिसे कम वयसक बालकके उच्चतर माध्यमिक शिक्षामे प्रवेशक अनुमति नहि देल जाइनि। एक वर्ष एहि हेतु देल जाइनि जे जँ कदाच कोनो बालक अमात रुचिक प्रतिकूल विषय ग्रहण कऽ लैत छथि तँ तकर मार्जन करबाक अवसर भेटि जाइनि। एक विषयक परीक्षामे जेना कतेक छात्र पाँच-पाँच सात-सात बेर बैसैत छथि आ तथापि ओहि नहि फटैत छनि तेना उच्चतर माध्यमिकक हेतु दूसँ तीन बेर मात्र अवसर देल जाइनि। अन्यथा समय ओ शक्तिक दुरुपयोग होइते रहत।

एकर अतिरिक्त कोनो विभागमे नोकरी प्राप्तक हेतु प्राथमिक शिक्षाके पूर्ण शिक्षा मानि लेल जाय। प्रमाणपत्र केवल प्राथमिक शिक्षा मात्रक अपेक्षित रहय। आजीविका परीक्षा पृथक् राखल जाय। ओहिमे उत्तीर्ण व्यक्ति ओहि पदक हेतु उपयुक्त बूझल जाथि। ओहि परीक्षामे सँढा-न्तिक पक्षक मूल्य थोड़ आ व्यावहारिक पक्षक मूल्य अधिक राखल जाय। एहन देखल जाइछ जे प्राथमिक शिक्षा प्राप्ति बाद बहुतो लोक व्यावहारिक जीवनमे बहुत योग्यता प्राप्त कऽ लैत छथि आ डिग्री नहि रहलाक कारणे ओ ओहि पदक भागो नहि बूझल जाइत छथि। से सुविधा भेटि गेला सन्ताँ एखन जे विद्वविद्यालयमे

मेला लागल रहैछ से नहि रहि जायत आ डिग्री प्राप्ति हेतु जे अनैतिक आचरण बढ़ि रहल अछि ताहूमे कमो आबि सकत।

एहि रूपेँ विविधीकरणक कार्या-

न्वयन हो तँ देशक बहुत पैघ समस्याक समाधान भऽ सकत। ई नितान्त अपेक्षित अछि आ संगहि एहि हेतु काल ओ धर्य सेहो अपेक्षित अछि।

भुइयाँ थानक पीपर

बेस झमटगर, हरिअर-हरिअर
पातसँ छारल लगइछ सुन्नर
राक्षस सनक धूआ लेने
ठाढ़ भेल अछि पिपरक गाछ!
शहरक डकहा-माहुर घोरल
बहैत हवासँ दूर—
मिथ्याडम्बर, छल, प्रपंचके
कुंठा, टीस, भ्रमित प्रज्ञाके
नमस्कार करइत अछि सदखन
बेस बढ़ाकऽ सूढ़—
भुलल बटोही, चरवाहाके
हुंठ मेहक हरवाहोके
आँजुर भरि-भरि पिया रहल अछि
जल शीतल, छाया भरिपूर!
हैजा, चेचक, जादू-टोना—
सँ वंचित हो सौंसे गौआ-दशोकोना
तँ बान्हल छँ उँचगर पीढ़ी
स्वर्ग जयबाक एके सीढ़ी।
बाँझ माउग अहिबातक मनसँ
बौआसिन सभ बेस जतनसँ
लगा गेल छँ सौंसे पीढ़ी
डोमा सिन्नुर बहुतो ठाम—
निःपुत्रीके बेटा भेल
भक्त जुगेसरक घर भरि गेल
तँ भऽ गेल छँ भुइयाँ थानक
परोपट्टामे आइ नाम!
बिसुखल गाय-महीस सभकेर
काटल गेल छँ कान
जहाँ-तहाँ खुट्टा गड़लासँ
बनि गेल छँक बथान।
नीपि गायकेर गोबर लऽकऽ
दीप जराकऽ
सिन्नुर कऽकऽ
कयल गेल अछि भाओ
एकटंगा दऽ ठाढ़ भेल छथि
रुइल यादव, रौंदी साहु।
ढारल गेल दूध गाछपर
खब फोड़िकऽ धार—
किछुके कूकुर चाटि गेल छँ
किछु टघरल छँ आरौ-पार।

नहि बिसरल अछि एखनो धरि ई
सन् उन्नैसक पड़ल अकाल
सोना भावे चाउर बिकायल
मचि गेल छल जे हाहाकार—
कानल-कलपल छल प्रजासभ
लगातार धरि कएक साल!
आयल छल फेर गदर बेआलिसक
बाजल छल दिगुल चहुँ कात
स्वतंत्रता-प्राप्ति हेतु जे
सभ मिलि कयने छल उत्पात!
क्रांतिक अगिलेसुआ सभ लेल
खीरि गेल छल सबतरि जाल
गोरा-पल्टन टेन्ट खसाकऽ
घर-घरमे पँसला सन्ताँ
लऽ आयल छल सभ टा माल!
फेर सुनने छल रेडिओक मुँहसँ
गांधीकेर मृत्युक ओ बात
जर-जबारी मौलि-जूलिकऽ
एही तरमे भानस कऽकऽ
खयने छल सभ ओछा-ओछाकऽ पात
देखने अछि ई गाछ न जाने
कतेक नाच ओ गान—
जालिम सिंह, मनचुमिआ नाटक,
हरिश्चन्द्रकेर मान!
मालिकक पोखरि, गाछी-ड्योढ़ी-
केर होइत अवसान
डोमा पासीके मुखिया भऽ खब
बघारैत शान!

कहाँ बिलयल सौरभ गामक
पोखरि आर इनार?
टोल-टोलमे कऽल गड़यल,
ठाम-ठाम बनल मोनार।
नकशे दिन-दिन बदलल जाइछ
ककर दीन छँ, के कहत आब—
'बाभनक गाममे राड़ पँजिआर?'
लीन तपस्वी जकाँ राति-दिन
सुखा रहल अछि सौंसे गात—
विश्व-शांतिकेर पाठ पढ़ाकऽ
बाचि रहल अछि पीपर सभ लग
गाम-देश-युगकेर इतिहास!

—श्री वीरेन्द्र, एम० ए०